अनिल शेखर "अमस"
अघोरानंद और
चौंसठ योगिनी
मंदिर का रहस्य

श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

अप्सरा, यक्षिणी, प्रेतनी, पिशाचिनी, जैसी इतर योनियाँ और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , किसी भी प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें और इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न

करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

अघोर साधनाओं का अपना एक अलग संसार है । जिसमें किसी प्रकार का नियम या प्रतिबंध, जो समाज में लागू है, वह लागू नहीं होता है । इसलिए कई घटनाएं और कई दृश्य आपको असहज लग सकते हैं लेकिन उससे विचलित ना हो और कहानी और कल्पना का एक भाग समझते हुए कहानी का पठन करें ।

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद और चौसठ योगिनी मन्दिर का रहस्य

पूर्व कथा

पिछली श्रृंखला तारापीठ की छाया में आपने पढ़ा था कि....

●●●●

मैं यानी तांत्रिक अघोरानंद अपने गुरु के निर्देश पर पश्चिम बंगाल के तारापीठ में भगवती महाविद्या तारा की साधना करने के लिए पहुंचा ।

वहां पर मुझे अपने ठहरने के लिए बनर्जी दादा के घर में व्यवस्था मिली । जहां पर मैंने कमरा किराए पर लिया था और उस कमरे में रहकर अपनी आगे की साधना करने की सोच रहा था | सौभाग्य से बनर्जी दादा भी साधक निकले और उनके साथ मेरी अच्छी ट्यूनिंग हो गई |

जब मैं श्मशान में पहुंचा तो वहां के साधुओं ने मेरा परीक्षण किया और इस परीक्षण में मैं सफल हुआ | जिसके बाद मुझे श्मशान में साधना करने के लिए जाने का अवसर मिला | श्मशान में वहां के सबसे प्रमुख साधु बाबा प्रचंड नाथ ने मुझे एक तांत्रिक वस्तु देने का ऑफर दिया, जिसके लिए मुझे एक परीक्षण पास करना था |

वह परीक्षण था - उनके पंचमुंडी आसन पर बैठ कर दिखाना | पंचमुंडि आसन पांच मरे हुए लोगों के सिद्ध खोपड़ी से बना होता है | इस पर केवल उच्च कोटि का साधक ही बैठ सकता है | सामान्य आदमी अगर बैठे तो उसे वह मुंड धकेल कर बाहर कर देते हैं - ऐसा बाबा ने मुझे बताया |

कई प्रकार के घटनाक्रमों से जूझता हुआ मैं उस आसन पर बैठने में सफल हुआ | जिसके बाद बाबा प्रचंड नाथ ने अत्यंत प्रसन्न होकर मुझे एक गुटका प्रदान किया | जिसका नाम था मदन कामेश्वर गुटिका |

शमशान में साधना के दौरान विभिन्न प्रकार के अनुभव हुए | तारापीठ में एक दिव्य साधिका के साथ सामना भी हुआ जिसका नाम था छाया |

साधना करते करते एक दिन मुझे सर्पों का जोड़ा नजर आया जो नागमणि संयुक्त थे | उनके सानिध्य से मुझे साधना के दौरान ही नागमणि भी प्राप्त हुई |

इस दौरान द्वारिका नदी के तट पर एक साधु बाबा और उनकी सहयोगी महिला साधु से मुलाकात हुई बाबा ने मुझे एक तांत्रिक वस्तु हत्था जोड़ी प्रदान की तथा उसकी प्रयोग विधि उस महिला साधु से सीखने का निर्देश दिया | इसे मैंने स्वीकार करके अपने पास रख लिया |

आठ दिन तक मैंने तारापीठ के महा श्मशान में साधना की । साधना के दौरान मुझे विभिन्न प्रकार के अनुभव और विचित्र किस्म की सामग्री आदि मिली ।

साधना के अंतिम दिन महाविद्या भगवती तारा ने मुझे दर्शन दिए | जिसके बाद मेरी स्थिति भावविह्वलता के

कारण बेहद अजीब सी हो गई थी | जिसे संभालने के लिए स्वयं गुरुदेव वहां उपस्थित हुए | उन्होने मुझे संभाला और उसके बाद मेरी हालत देखकर मुझे मेरे कमरे तक पहुंचा दिया ।

अगले दिन मैं हत्था जोड़ी का प्रयोग सीखने के लिए रेणु माई को ढूँढने निकला । मेरी उनसे मुलाकात द्वारिका नदी के घाट पर हो गई । उन्होंने मुझे अपने साथ चलने को कहा और मैं उनके साथ चल पड़ा.....

अब आगे .....

◆◆◆◆◆

चौसठ योगिनी मन्दिर का रहस्य

मैं रेणु माई के साथ चल पड़ा । हम दोनों चलते चलते शहर से काफी दूर आ गए । शाम ढलने लगी थी । हल्का हल्का अंधेरा छाने लगा था ।

तारापीठ में साधु चाहे वह पुरुष हो या महिला हो या नागा हो या अघोरी हो , साल भर दिखाई देते रहते हैं ।

वहां के लोगों के लिए वह कोई अचरज या असामान्य बात नहीं है ।

हम लोग जिस रास्ते पर जा रहे थे उस रास्ते पर गिनती के लोग दिखाई दे रहे थे । धीरे-धीरे शहर पीछे छूट गया और रास्ता सुनसान होने लगा ।

कुछ आगे एक छोटा सा पुल था । जिसके नीचे से शायद सिंचाई वाला नहर बहता था । उस पुल के बाजू से एक छोटी सी पगडंडी जाती थी । हम सड़क से उतरकर उसपर चल पड़े ।

लगभग आधे किलोमीटर के बाद घना जंगल चालू हो गया | जंगल के अंदर लगभग हम लोग 1 किलोमीटर तक चले | रेणु माई आगे आगे चल रही थी और मैं उसके पीछे पीछे ....

न वह कुछ बोल रही थी ना मैं कुछ बोल रहा था ....

उसकी चलने की गति इतनी तेज थी की कहीं रास्ता ना भटक जाऊं, यह सोचकर पूरी एकाग्रता से पीछे चल

रहा था | एक किलोमीटर जंगल के अंदर जाने के बाद वहां एक पुराना मंदिर दिखाई दिया |

उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह कम से कम चार पाँच सौ साल पुराना जरूर रहा होगा |

उसकी बाहरी दीवाल पर वक्त के निशान दिख रहे थे |

उस मंदिर के चारों तरफ हम लोगों ने एक चक्कर लगाया जैसे परिक्रमा की हो, वहां पहुंचने के बाद मुझे एक आश्चर्यजनक बात लगी कि उस में कहीं भी दरवाजा नहीं था |

पूरे पत्थरों से बने हुए उस मंदिर में चारों तरफ खजुराहो जैसी मिथुन मुद्रा वाली आकृतियां बनी हुई थी | उनको देखकर ऐसा लगता था जैसे अभी वह जीवित हो उठेंगे | जिस कलाकार ने भी उसे बनाया था उसकी शिल्प कला को प्रणाम करता हुआ मैं रेणु माई के पीछे पीछे चल रहा था |

हम दोनों ने उस मंदिर की सात परिक्रमा की और हर बार मैं सोचता था कि अभी इसके अंदर जाएंगे कैसे ?

वह मंदिर लगभग 50 या 60 पीठ के व्यास का रहा होगा | उसकी ऊंचाई लगभग 20 से 25 फीट रही होगी | सबसे खास बात यह थी कि जंगल में होने के कारण उस मंदिर पर बहुत ज्यादा तोड़-फोड़ के निशान मौजूद नहीं थे | वक्त की मार से जो नुकसान हुआ था उसके अलावा कोई खास नुकसान उसके आवरण पर नहीं दिख रहा था |

सात परिक्रमा पूरी करने के बाद रेणु माई एक मूर्ति के सामने दंडवत प्रणाम करने लगी | मैं भी उनको देखकर जमीन पर लेटा और दंडवत प्रणाम किया वह मूर्ति शिव और शक्ति की थी | जिसमें वह विपरीत रता दिख रही थी |

मैंने उस मूर्ति की तरफ बड़े ध्यान से देखा तो मुझे वह मूर्ति बाकी मूर्तियों से थोड़ी सी अलग दिखाई दी | जहां सारी मूर्तियां बादामी रंग के पत्थरों से बनी हुई थी, वहां यह मूर्ति ज्यादा गहरे बादामी रंग के पत्थर से बनी हुई थी | यह अंतर बेहद हल्का सा था | जिसे बहुत ध्यान से देखा जाये तभी भाँपा जा सकता था | मैंने और ध्यान से देखा तो लगभग 3 से 4 फुट चौड़ा और लगभग 7 फुट

ऊंचा वह पूरा का पूरा पत्थर बाकी पत्थरों से हटकर था |

दंडवत प्रणाम करने के बाद रेणु माई ने मेरा हाथ पकड़ा | उस विग्रह की ओर देखते हुए कुछ मंत्रों का उच्चारण किया | आसमान की ओर देखते हुए उन्होने लगभग 1 से 2 मिनट तक कुछ मन ही मन बुदबुदाया | उसके बाद मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरा शरीर हल्का हो गया है | माई का मंत्र जाप जारी था | अब वह सामने बने हुए शिव शक्ति के विग्रह की ओर देखते हुए मंत्र जाप कर रही थी |

मेरे देखते-देखते उस पत्थर का रंग बदलने लगा | पूरे का पूरा पत्थर धीरे-धीरे हल्के बादामी रंग का हुआ और धीरे-धीरे उसकी रंगत कम होने लगी और ऐसा होते होते अंततः वह लगभग पारदर्शी सा हो गया | पत्थर के आर पार दिखना ? यह कैसे संभव है ? लेकिन अब मुझे मंदिर के अंदर की चीजें हल्की-हल्की धुंधली सी दिखाई दे रही थी.....

तभी ! मुझे झटका सा लगा !

रेणु माई ने मेरा हाथ पकड़कर खींचा ! वह सीधे उस पत्थर की ओर आगे बढ़ गई !

अद्भुत आश्चर्य ! हम दोनों उस पत्थर को पार कर के अंदर आ गए | ऐसा लगा जैसे कोई होलोग्राफिक इमेज थी जिसे हम लोग पार कर गए हों .....

यह मेरे लिए अद्भुत और अविश्वसनीय सी बात थी |

मैंने फिर से पीछे पलट कर देखा ! अब मुझे बाहर की चीजें दिख रही थी | बाकी सारे पत्थर समान्य थे उनके पार की चीजें नहीं दिख रही थीं लेकिन उस के आर पार दिख रहा था |

धीरे-धीरे उसका रंग वापस गहरा होने लगा | गहरा होते-होते वह वापस अपने पूर्व स्वरूप में आ गया और आर पार दिखाई देना भी बंद हो गया |

जब वह पूरी तरह से अपनी पूर्व अवस्था में आ गया तो मैं भी यथार्थ के धरातल पर उतरा | मैंने देखा की माई आगे बढ़ चुकी थी | मैं उनके पीछे भागा | वह मंदिर अंदर से बेहद भव्य था | बाहर जैसी मूर्तियां लगी थी

ठीक वैसी ही मूर्तियां अंदर भी लगी हुई थी | बाहर की मूर्तियों की तुलना में अंदर की मूर्तियां ज्यादा बेहतर स्थिति में दिखाई दे रही थी |

मंदिर के ऊपर छत नहीं थी | ऊपर खुला आसमान साफ दिखाई दे रहा था | उस मंदिर के ठीक बीच में एक बड़ा सा शिवलिंग और उसके सामने विशालकाय नंदी की मूर्ति थी | शिवलिंग लगभग 10 फीट का रहा होगा और नंदी की आकृति कम से कम 40 से 50 फीट की रही होगी | यह दोनों सफेद संगमरमर की बनी हुई थी | जहां पूरा मंदिर बदामी पत्थरों से बना हुआ था सिर्फ यही दोनो विग्रह सफेद रंग के संगमरमर से बनी हुए थे | अब जो मेरा गृहस्थी, या यूं कहें कि सामान्य दिमाग था, वह यह सोचने में लग गया कि, इतने बड़े-बड़े संगमरमर के पत्थर जिनसे यह मूर्तियां बनी है इतने साल पहले यहां कैसे लाई गई होंगी ?

फिर मैंने अपने विचारों को झटका और सोचा कि अब तक जो तेरे साथ घट रहा है, उसमें विश्लेषण करने लायक क्या है ?

सब कुछ तो अविश्वसनीय ! आश्चर्यजनक ! अद्भुत ! है |

स्वाभाविक रूप से आगे भी ऐसी ही घटनाएं होती रहेंगी | बेवजह विचार और चिंतन करके अपना समय खराब करने का कोई मतलब नहीं है | वर्तमान समय में जो कार्य करना है उसकी ओर आगे बढ़ना चाहिए |

यह विचार आते ही मैंने बाकी सारे विचारों को दिमाग से निकाल फेंका और आगे की कार्यवाही के लिए तयार हो गया |

मैंने देखा की माई अंदर बनी हुई सारी मूर्तियों को प्रणाम करती हुई घूम रही है और मैं मंदिर के सौंदर्य का दर्शन कर रहा हूं ....

मैं तुरंत उनके पीछे-पीछे दौड़ा और झटपट झटपट सभी मूर्तियों को प्रणाम करता हुआ उनके पास पहुंच गया | इस प्रकार से लगभग सारी मूर्तियों को उन्होंने प्रणाम किया और एक परिक्रमा पूरी हो जाने के बाद वे शिवलिंग के पास आकर बैठ गई | मैं भी उनके साथ आकर बैठ गया |

अब समय था भगवान शिव के पूजन का ....

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे सनातन धर्म में भगवान शिव को महादेव कहा जाता है |
वे तंत्र साधनाओं के अधिपति माने जाते हैं |

जितनी भी तंत्र साधनाएं हैं वह सारी की सारी भगवान शिव और महामाया के द्वारा सृजित है |

इसलिए उनका पूजन अनिवार्य होता है ....
हम दोनों शिवलिंग के सामने बैठे थे .....
रेणु माई ने शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण प्रारंभ किया ....

शिव ताण्डव स्तोत्र

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं, चकारचण्डताण्डवं तनोतु
नः शिवो शिवम् ॥१॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी, विलोलवीचिवल्लरी
विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके, किशोरचंद्रशेखरे
रतिः प्रतिक्षणं ममं ॥२॥

धराधरेंद्रनंदिनी विलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगंतसंतति प्रमोद
मानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे
मनोविनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदंबकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदांधसिंधुरस्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदद्भुतं
बिंभर्तुभूतभर्तरि ॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-प्रसूनधूलिधोरणी
विधूसरांघ्रिपीठभूः।
भुजंगराजमालयानिबद्धजाटजूटकः श्रियैचिरायजायतां
चकोरबंधुशेखरः ॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनंजयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपंचसायकंनमन्निलिंपनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसंपदे
शिरोजटालमस्तुनः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनंजया
धरीकृतप्रचंडपंचसायके।
धराधरेंद्रनंदिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनी
त्रिलोचनेरतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमंडलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहुनिशीथनीतमः
प्रबद्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः कलानिधानबंधुरः
श्रियं जगंद्धुरंधरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपंचकालिमप्रभा-विडंबि कंठकंध
रारुचि प्रबंधकंधरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिंद भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥९॥

अखर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी-रसप्रवाह माधुरी
विजृंभणा मधुव्रतम्।
स्मरांतकं पुरातकं भावंतकं मखांतकं गजांतकांधकांतकं
तमंतकांतकं भजे ॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजंगमस्फुरद्धगद्धगद्विनिर्गमत्कराल
भाल हव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदंगतुंगमंगलध्वनिक्रमप्रवर्तितः
प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकमस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः
सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः
कदा सदाशिवं भजे ॥१२॥

कदा निलिंपनिर्झरी निकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः
सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति
मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका-
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं परिश्रय परं पदं
तदंगजत्विषां चयः ॥१४॥

प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनी
जनावहूत जल्पना।
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः शिवेति
मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥१५॥

इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं पठन्स्मरन्
ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं विमोहनं हि
देहनां सुशंकरस्य चिंतनम् ॥१६॥

पूजाऽवसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भूपूजनपरम्
पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेंद्रतुरंगयुक्तां लक्ष्मी सदैव सुमुखीं
प्रददाति शम्भुः ॥१७॥

॥ इति शिव ताण्डव स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

रेणु माई की आवाज बड़ी बुलंद थी |

उनके मुख से शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण सुनना अपने आप में एक सुखद अनुभव था ...

शिव तांडव स्तोत्र भगवान शिव के अनन्य शिष्य लंकापति दशानन रावण के द्वारा रची हुई एक अप्रतिम रचना है | जिसका उच्चारण विभिन्न पूजन स्थलो पर आज भी होता है | यह एक गेय अर्थात गाने के योग्य रचना है और इसे सुनने से रोम-रोम हर्षित होता है |

माई की आवाज और उस मंदिर के अंदर की जो तांत्रिक शक्तियों की उपस्थिति थी, उससे पैदा हुई चैतन्यता, इन सबने मिलकर वहां एक अभूतपूर्व माहौल बना दिया |

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर का रोम रोम खड़ा हो गया हो | मेरी पीठ की हड्डियों में स्पंदन सा महसूस होने लगा | यह तब होता है जब आपकी कुंडलिनी में स्पंदन प्रारंभ होता है.....

शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण समाप्त हुआ .....

रेणु माई ने अपने हाथ हवा में उठाएं और उनके हाथ में धतूरे के दो पुष्प न जाने कहां से आ गए !

उन्होंने वह शिवलिंग पर अर्पित किए |

पास में रखे हुए पात्र में से जल समर्पित किया और शिवलिंग को प्रणाम किया | मैंने भी प्रणाम किया |

इसके बाद उन्होंने घनपाठ आरंभ किया | भगवान शिव की स्तुति में किया जाने वाला यह एक विशिष्ट पाठ है | सामान्यतः काफी अच्छी स्थिति में पहुंचे हुए साधक या कर्मकांडी ही कर पाते हैं | इसमें शब्दों का संगुफन और उनका उच्चारण इस प्रकार से होता है कि पूरे वातावरण में तरंगे उत्पन्न हो जाती है | जिसे सुनने वाला व्यक्ति भी अंदर से तरंगित होता है |

भगवान शिव स्वयं नटराज है |

नृत्य के अधिपति हैं |

इसलिए उनके पूजन के इस स्वरूप में पूरी प्रकृति नृत्य करती हुई प्रतीत होती है .....

पाठ पूर्ण होने के बाद उन्होंने मुझे बताया कि वह शिवलिंग लगभग साढे 600 साल पुराना था | इसकी स्थापना नेपाल के महाराजा चक्रधर देव ने सन 1404 ईस्वी में की थी |

वह बोली - यह मंदिर वास्तव में एक योगिनी मंदिर है | उसमें चारों और स्थापित मूर्तियां चौसठ योगिनी की है | तंत्र क्षेत्र में योगिनीयों का स्थान बेहद महत्वपूर्ण होता है | जितनी भी महाविद्या साधनाएं है उनमें सबसे पहले योगिनी साधना करनी आवश्यक होती है | अगर योगिनी साधना न की जाए तो इतनी आसानी से सफलता नहीं मिलती है | विशेष रूप से महाकाली से संबंधित साधनाएं और काली कुल से संबंधित महाविद्याओं की साधना में योगिनियों की साधना करना बेहद जरूरी होता है....

उन्होंने आगे बताया - प्राचीन काल में जिन राजघरानों में तंत्र साधनाओं के प्रति विशेष रुझान हुआ करता था, वह इस प्रकार के चौसठ योगिनी मंदिरों का निर्माण करते थे | इसके अंदर विशिष्ट साधनाएं संपन्न की जाती

थी | इस प्रकार की गोल संरचनाएं पूरे विश्व में बहुत कम जगहों पर मिलती है | इनको बनाने का मतलब ही यह है कि एक ऐसा चक्र जो अंतहीन है .....

अगर आप वृत्त में किसी भी जगह से चलना चालू करें तो यह बता नहीं सकते कि कहां से प्रारंभ है और कहां पर अंत .....

मानव जीवन और यह ब्रह्मांड भी सनातन धर्म में अंतहीन माना जाता है .....

वह आगे बोली - इस प्रकार ये चौसठ योगिनी मंदिर उस अनंत ब्रह्मांड का प्रतीक होता है | चौसठ योगिनी मंदिर भारत में कई जगहों पर हैं | इसी की संरचना से प्रभावित होकर संसद भवन की इमारत भी बनाई गई है | जो कि ठीक वैसी ही दिखाई देती है....

यह बात सुनने में मुझे थोड़ी सी अजीब लगी क्योंकि मैंने तो सुना था कि संसद भवन को किसी अंग्रेज डिजाइनर ने बनाया था । मुझे थोड़ा झटका सा लगा लेकिन फिर मैंने जब संसद भवन को याद किया और

उस मंदिर को दोबारा से देखा तो वाकई में लगभग वैसी ही संरचना थी....

खैर .....

भगवान शिव का पूजन संपन्न हो चुका था और अब आगे की प्रक्रिया क्या होगी ? यह सोचने में मैं भी मग्न था | रेणु माई आंख बंद करके ध्यान लगाने में मग्न थी | थोड़ी देर के बाद उन्होंने आंख खोली और मुझे साथ चलने का इशारा किया | मैं उनके साथ चल पड़ा |

सूरज ढलने का समय हो रहा था इसलिए पश्चिम दिशा समझ में आ रही थी | उन्होंने मुझे आग्नेय कोण में स्थित एक मूर्ति के पास ले जाकर खड़ा किया | वह मूर्ति भी उसी प्रकार की मुद्रा में बनी हुई थी | मूर्ति के बगल में एक गोल आकृति थी जिसमें एक छेद बना हुआ था | माई ने अपनी जेब से एक तांबे का चाबी नुमा लगभग 10 इंच लंबा डंडे जैसा चीज निकाला और उस छेद में डाल दिया | वह लगभग आधा घुसा | उसके बाद माई ने उसे दाहिनी तरफ घुमाया और बाकी का

हिस्सा भी अंदर घुसा दिया उसके बाद उन्होंने उस चाबी को बाहर निकाल लिया .....

दरवाजे का स्वरूप अब उस पत्थर में दिखाई देने लगा था | धीरे-धीरे वह पत्थर पीछे की तरफ दरवाजे की तरह खुलने लगा | एक आदमी के घुसने लायक जगह बन गई | माई ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया और उस दरवाजे के अंदर चली गई | मैं भी उनके पीछे-पीछे अंदर घुसा मेरे पीछे दरवाजा धीरे-धीरे वापस बंद हो रहा था | ऐसा लग रहा था, जैसे उसमें कोई टाइमर हो | जो एक निर्धारित समय के बाद उसे वापस बंद कर देता है |

दरवाजा बंद हुआ तो सामने घुप्प अंधेरा था | अंधेरा देख कर मैं रुक गया | तभी मुझे माचिस जलने की आवाज आई | वह एक बड़े से दीए को जला रही थी | वह दिया लगभग 4 फुट ऊंचा था | उसमें एक उंगली के बराबर मोटी बत्ती पड़ी हुई थी | जिसे माई ने जला दिया | अब वहां प्रकाश फैल गया | प्रकाश करने के बाद मैंने देखा कि वह लगभग 6 फुट बाई 6 फुट का एक कमरा

था | जिसमें छत नहीं थी | इसकी दीवालों की ऊंचाई भी मंदिर जैसी थी |

हत्था जोड़ी

जमीन पर पत्थरों में दो यंत्र खुदे हुए थे | जो लगभग एक दूसरे के आमने-सामने थे और उनके बीच में करीब-करीब एक डेढ़ फीट का फासला था | एक यंत्र के ऊपर माई बैठ गई | दूसरे यंत्र के ऊपर मुझे बैठने का इशारा किया | मैं भी उसके ऊपर जाकर बैठ गया |

उन्होने अपनी थैली में हाथ डाला और एक थाली निकालकर सामने रखी | मुझे उसमें हत्था जोड़ी रखने का संकेत किया | मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और जोड़ी को निकालकर उस थाली में रख दिया |

उन्होंने मुझे बताया - यह एक जड़ से निकलता है और इसमें बनी हुई हाथों की आकृति की जोड़ी होने की वजह से इसे हत्था जोड़ी कहा जाता है | इसके ढेरों प्रयोग है | यह मूल रूप से आकर्षण का काम करती है | इसे स्त्री पुरुष के बीच में आकर्षण के लिए प्रयोग किया जा सकता है , जिसे तंत्र में षट कर्म के अंतर्गत वशीकरण कहा जाता है |

षटकर्म

मैंने पूछा - यह षटकर्म क्या होते हैं ?

उन्होंने बताया - मारण, मोहन, वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन और शांति ये छह प्रकार के कर्म होते हैं, जिसे तंत्र साधनाओं के द्वारा किया जा सकता है | इन्हें ही षटकर्म कहा जाता है | इनमें से एक वशीकरण है | जिसमें स्त्री और पुरुष के बीच में आकर्षण पैदा किया जाता है | यह नौकर और मालिक के बीच में भी किया जा सकता है | कुल मिलाकर कहा जाए तो किसी भी दो लोगों के बीच में आकर्षण का भाव पैदा करने के लिए, उनके बीच में सामन्जस्य स्थापित करने के लिए, यह प्रयोग संपन्न किया जा सकता है |

इसका प्रयोग मैं अब तुम को समझाने वाली हूं | आज रात के 9 बजे से लेकर सुबह 9 बजे तक तुमको यह मंत्र जाप करना है | इस बीच तुम अपना आसन नहीं छोड़ सकते हो .....

इस बात का ध्यान रखना.....

वरना साधना खंडित हो जाएगी |

हत्था जोड़ी पर वशीकरण प्रयोग

उस समय शाम के लगभग 7 बजे होंगे । रेणु माई ने लगभग आधे पेज का मंत्र मुझे बताया । अब आप सोच रहे होंगे कि आधे पेज का मंत्र बताने के लिए एक घंटा कैसे लगेगा ?

दरअसल वह एक ऐसा मंत्र था जिसे लिखकर नहीं बोला जा सकता था । उसे पहले याद करना पड़ता था और उसके बाद ही उसको जाप किया जा सकता था । उन्होंने मुझे उस मंत्र को लगभग 21 बार पढ़ कर दोबारा से बुलवाया तब कहीं जाकर मुझे वह याद हुआ ।

लगभग 8:45 बजे वह उस कमरे से बाहर चली गई । रात 9 बजे से मुझे मंत्र जाप चालू करना था | मैंने थोड़ा हाथ पैर वगैरह हिलाया । अपने थैले को बगल में रख, पहले गुरु ध्यान किया

अखंड मंडलाकारम व्याप्तम येन सचराचरम् |
तत्पदम दर्शितम येन तस्मै श्री गुरुवे नमः||

गुरुरब्रह्मा गुरुरविष्णु गुरुरदेवो महेश्वरः |

गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः ||

गुरु ध्यान के बाद मैंने भगवती जगदंबा को याद किया

सर्व मंगल मांगल्य शिवे सर्वार्थ साधिके |
शरण्यै त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते ||

इसके बाद मैंने मंत्र जाप करना प्रारंभ किया ।

लगभग 1 घंटे तक सब कुछ सामान्य रहा । एक घंटे के बाद हत्था जोड़ी में से उसी प्रकार की हल्की पीली रोशनी निकलने प्रारंभ हो गई जैसा कमरे में अलमारी के अंदर एक रात को निकली थी । प्रकाश बड़ा अजीब और सुखद सा था । बिलकुल वैसे ही जैसे कभी-कभी प्रातःकालीन सूर्य पीले रंग का होता है । धीरे-धीरे उसका पीलापन सुनहरे लाल रंग में बदलता जा रहा था ।

कुछ देर में ऐसा महसूस होने लगा जैसे उसके अंदर से आग की लपटें निकल रही हो | उन लपटों की आंच में महसूस कर सकता था | धीरे-धीरे वहां का तापमान बढ़ने लगा | साथ ही उस हत्था जोड़ी में से निकलने

वाली लपटें भी लंबी होने लगी | जैसे हवन कुंड से लपटें निकलती हैं ठीक वैसे ही इस छोटे से हत्था जोड़ी में से लपटें निकल रही थी | वह लपटें इतनी लंबी लंबी थी कि मेरे से मुश्किल से एक आध इंच के फासले तक पहुंच जाती थी |

वे लपटें हर दिशा में निकल रही थी | धीरे-धीरे कमरे का तापमान बढ़ने लगा दीवाल का रंग तक बदलने लगा | ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी भट्टी में बैठा हुआ हूं | मेरे पूरे शरीर से पसीना बह रहा था | मैं उस पसीने में नहा रहा था ऐसा कहना ज्यादा उचित होगा | लगभग 10 मिनट तक यही स्थिति रही और उसके बाद कमरे की तपिश धीरे-धीरे कम होने लगी | तापमान कम होते होते सामान्य हो गया | साथ ही हत्था जोड़ी से निकलने वाली लपटें भी धीरे-धीरे गायब हो गई | वापस वही पीले रंग की हल्की हल्की रोशनी बिखरने लगी |

कुछ समय के बाद मेरे सामने जो यंत्र बना हुआ था उसमें भी परिवर्तन आने लगा । उसमें बनी हुई रेखाएं धीरे धीरे लाल रंग में परिवर्तित होती जा रही थी । वह पूरा का पूरा यंत्र धीरे-धीरे लाल रंग का हो गया

। मेरे सामने थाली में रखा हुआ हत्था जोड़ी पीले रंग का आभामंडल बिखेर रहा था । वह यंत्र लाल रंग का आभामंडल बिखेरता रहा । उसके बाद सामने वाला यंत्र धीरे धीरे ऊपर की ओर उठने लगा । ऊपर उठने के बाद वह धीरे-धीरे घूमने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे कोई लाल रंग का गोल चक्कर जिसके अंदर यंत्र बना हुआ है वह हवा में घूम रहा हो । घूमते घूमते वह यंत्र मेरी थाली के ठीक ऊपर में आ गया |

मेरा मंत्र जाप जारी था । अब वह हत्था जोड़ी धीरे-धीरे हवा में उठने लगी । वह जाकर उस यंत्र के मध्य में बने हुए खाली जगह में बैठ गयी । अब हत्था जोड़ी यंत्र के साथ हवा में घूम रही थी । मैं मंत्र जाप करता जा रहा था और इस अद्भुत दृश्य को देख रहा था ।

मेरे सामने जहां पर यंत्र बना हुआ था वहां पर एक धुंधली सी आकृति उभरने लगी । लगभग 15 से 20 मिनट के बाद वह आकृति थोड़ी-थोड़ी स्पष्ट होने लगी । यह आकृति ठीक वैसी ही थी जैसे कि हम लोगों ने दरवाजे से अंदर आते समय उस गहरे बदामी रंग वाले पत्थर पर देखी थी ।

यूं कह सकते हैं कि उस विशेष कक्ष के अधिष्ठाता देवी देवता की आकृति वहां पर स्पष्ट हो रही थी । संभवतः वही वशीकरण के लिए स्थापित देवता और देवी रहे होंगे ।

भगवान शिव और शक्ति के भी सहस्त्र रूप है और उनके सभी स्वरूप अपने आप में अलग अलग विशेषताओं के लिए और विशेष प्रयोजनों के लिए साधना में प्रयुक्त किए जाते हैं । उदाहरण के लिए भगवान शिव का भैरव स्वरूप जहां रक्षा में काम आता है वहीं पर भगवान शिव का मृत्युंजय स्वरूप रोग निवारण के लिए काम आता है | संभवतः यह भी उसी प्रकार का कोई रूप रहा होगा ।

वह धुंधला स्वरूप धीरे-धीरे स्पष्ट होता हुआ ठीक वैसा ही बन गया जैसा अंदर आते समय दरवाजे पर दिखा था । ऐसा लग रहा था जैसे उसे वहां से निकालकर उस यंत्र के बीच में रख दिया गया हो । वह आकृति जिसे मूर्ति भी कह सकते हैं अब वहां पर मौजूद थी । उस आकृति में कुछ तो ऐसा था जो बेहद आकर्षक और मनमोहक था ।

मेरा मंत्र जाप लगातार जारी था । अब स्थिति यह थी कि वह विग्रह मेरे सामने रखा हुआ था, जो कि उस यंत्र के ऊपर स्थापित था जिसके ऊपर से रेणु माई उठकर गई थी ।

थाली के ठीक ऊपर में वह लाल रंग का चक्र घूम रहा था । उसके बीचो-बीच हत्था जोड़ी भी घूम रहा था । मैं दूसरे यंत्र के ऊपर बैठा था और मंत्र जाप कर रहा था । काफी देर तक मंत्र जाप इसी प्रकार संपन्न हुआ । मेरे हाथ में घड़ी बंधी हुई थी । मैंने उसमें समय देखा सुबह के लगभग 3:30 बज रहे थे । मंत्र जाप अभी जारी था ।

थोड़ी देर के बाद वह यंत्र जिस पर मैं बैठा हुआ था वह भी ऊपर उठने लगा । धीरे धीरे मेरा यंत्र इतनी ऊंचाई पर आ गया कि वह घूमता हुआ यंत्र और हत्थाजोड़ी मेरी आंखों के लेवल पर थे । मैं हवा में यंत्र के ऊपर बैठा हुआ था । मेरे सामने लाल रंग का दूसरा यंत्र हत्थाजोड़ी को अपने साथ लेकर घूम रहा था ।

मेरा मंत्र जाप जारी था । लगभग एक घंटे यही स्थिति रही । सुबह के लगभग 5 बजे यंत्र के ऊपर रखा हुआ

विग्रह भी धीरे-धीरे ऊपर आने लगा । वह भी उसी लेवल पर आ गया जहां वह यंत्र घूम रहा था । अब स्थिति यह थी कि वह भी हवा में था । यंत्र और हत्था जोड़ी हवा में घूम रहे थे और मैं भी मंत्र जाप करते हुए हवा में था ।

कुछ समय और इसी प्रकार गुजरा फिर मैंने देखा कि रेणु माई कमरे में आई और इस दृश्य को देखने के बाद मेरी तरफ आश्वासन भरी निगाहों से देखा । जैसे कह रही हो कि तुम ठीक जा रहे हो । फिर वह कमरे से बाहर चली गई । जिस दरवाजे से हम घुसे थे, उसके दाहिनी तरफ एक छोटा दरवाजा और था, जहां से वह अंदर आई थी और बाहर भी गई थी । यह दरवाजा सामान्य सा था जो लोहे से बना हुआ था ।

सुबह होने जा रही थी, आसमान में हल्की हल्की रोशनी आनी चालू हो गई थी । धीरे-धीरे धूप खिलने लगी | लगभग 7 बजे का समय हो चुका था । अब वह विग्रह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा , और दूसरे वाले यंत्र की बजाय उस जगह पर आकर बैठ गया, जहां पर मैं बैठा था ।

अब स्थिति यह थी कि वह विग्रह यंत्र के ऊपर था । उससे लगभग 3 फुट की ऊंचाई पर मैं हवा में लटका हुआ था । मेरे सामने लाल रंग का यंत्र अपने बीच में हत्था जोड़ी को लेकर घूम रहा था ।

कुछ समय बाद वह यंत्र मेरे चारों तरफ होने लगा । वह धीरे धीरे मेरे चारों तरफ गोल गोल चक्कर काटने लगा | कुछ समय के बाद मेरे सर के ऊपर आकर स्थिर होने लगा । उसमें से हत्था जोड़ी निकल-कर नीचे रखी हुई थाली में चली गई । वह यंत्र घूमता हुआ धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा और मेरे सिर के ऊपर आकर टिक गया । मैं उसके घूमने को महसूस कर रहा था । कुछ समय बाद ऐसा लगा जैसे वह यंत्र मेरे सहस्त्रार में अंदर प्रवेश कर गया हो । मुझे सर के अंदर कुछ घूमने जैसा आभास हो रहा था जो लगभग 15:20 मिनट तक रहा और फिर शांत हो गया । धूप की तीव्रता को देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा था जैसे सुबह के 8 बज गए होंगे ।

धीरे धीरे मैं नीचे की ओर आने लगा | मुझे लगा मैं उस विग्रह से टकरा जाऊंगा, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । जैसे-जैसे मैं नीचे आया, आभास हुआ कि वह विग्रह

ठीक वैसा ही था, जैसे वह पत्थर पारदर्शी हुआ था । मैं धीरे-धीरे उसके अंदर समाते हुए नीचे उस यंत्र पर पहुंच गया और ऐसा लगा वह भी मेरे अंदर समाहित हो गया हो ।

मेरा मंत्र जाप जारी था | निर्धारित समय लगभग पूर्ण होने वाला था | अचानक मेरे पांव में भयानक दर्द उठने लगा | ऐसा लगा, जैसे पैर की सारी नसें खिंच रही है | यह अनुभव ठीक वैसा ही था, जैसे जब आप अचानक बहुत ठंड में खुले बदन से ज्यादा देर बैठ जाए तो शरीर के अंगों में जैसी अकड़न और खिंचाव महसूस होता है ठीक वैसा ही खिंचाव मैं महसूस कर रहा था | दर्द बहुत जबरदस्त था लेकिन सहन करना मजबूरी थी | मेरी आंखों से दर्द के मारे आंसू बह रहे थे | मेरा मंत्र जाप जारी था | हो सकता है काफी देर एक ही स्थिति में बैठने की वजह से ऐसा हुआ हो, क्योंकि मैं लगभग 12 घंटे से उसी आसन पर बैठा हुआ था |

खैर जो भी हो मंत्र जाप तो मुझे पूर्ण करना ही था | इसलिए मैं लगातार मंत्र जाप करता रहा | दर्द के मारे

आंखों से आंसू बहते रहे लेकिन मैंने मंत्र जाप नहीं छोड़ा |

थोड़ी देर के बाद रेनू माई फिर से कमरे में आई और सामने वाले आसन पर आकर बैठ गई | मेरा मंत्र जाप अभी जारी था | अब उसके साथ रेनुमाई का मंत्र जाप भी सम्मिलित हो गया | हम दोनों एक लय में उसी मंत्र का उच्चारण कर रहे थे | लगभग 15:20 मिनट तक यह उच्चारण संयुक्त रूप से चलता रहा |
वह कमरा इस तरह से बना हुआ था कि जब जोर से मंत्र उच्चारण होता था तो ऐसा लगता था जैसे कमरे की हर दीवार साथ में मंत्रोच्चार कर रही हो | वह अनुभूति बड़ी दिव्य और प्रभावशाली होती थी लगभग आधे घंटे के बाद उन्होंने अपने हाथ जोड़े और मुझे भी हाथ जोड़ने का संकेत किया | मैंने हाथ जोड़ लिया | उसके बाद उन्होंने विचित्र प्रकार का एक मंत्र पढ़ा जो शायद किसी दक्षिण भारतीय भाषा में था | उस मंत्र के पाठ के बाद उन्होंने विभिन्न प्रकार की मुद्राएं दिखाईं | मुद्राएं हाथ की उंगलियों से बनाई जाती है | तंत्र साधना में इनका बहुत महत्व होता है |

इसका प्रयोग आपने बाबा रामदेव के द्वारा अपने प्राणायाम तथा योग के समय हाथ की उंगलियों को जोड़कर बनाई जाने वाली मुद्रा में जरूर देखा होगा | योग और तंत्र वास्तव में दो अलग-अलग विधाएं जरूर है लेकिन जो तांत्रिक होता है उसे योगिक क्रियाएं भी मालूम होती है |

हां यह जरूर संभव है कि जो केवल योगी हो वह तंत्र के विषय में विशेष जानकारी ना रखता हो | लेकिन अगर कोई वास्तव में तांत्रिक होगा तो उसे योग का ज्ञान अवश्य होगा | खैर.....

इन मुद्राओं में से कई मुद्राओं को उन्होंने मुझसे भी करवाया |

सबसे आख़िरी में उन्होंने मुझे योनि मुद्रा सिखाई और अपने हाथों को समर्पण की स्थिति में हत्था जोड़ी के ऊपर रखने के लिए कहा | अब हत्था जोड़ी बीच में थी और योनि मुद्रा में मेरे दोनों हाथ उसके एक तरफ से और उसी मुद्रा में माई के हाथ दूसरी तरफ से थे |

यह वास्तव में जप समर्पण की मुद्रा होती है ...

जब मंत्र जाप पूर्ण हो जाता है तब उसे इसी मुद्रा के माध्यम से संबंधित देवता को समर्पित किया जाता है |

समर्पण के बाद मैंने घड़ी देखी 9:30 बज चुके थे |

मैं उठा और रेनू माई के चरण स्पर्श किए | उनहोने सर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद दिया |

इसके बाद उन्होंने कहा - अब यह हत्था जोड़ी सिद्ध हो चुका है इसे हमेशा अपने पास रखना.....

यह कक्ष कामेश्वर शिव और कामेश्वरी शक्ति का है जिसे दूसरे अर्थों में रति और कामदेव भी कह सकते हैं | इनकी कृपा के बिना वशीकरण सिद्धि कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती है |

इनकी कृपा प्राप्त हो जाने के बाद हर प्रकार के वशीकरण प्रयोग सफलतापूर्वक संपन्न किए जा सकते हैं | वशीकरण का तात्पर्य सामने वाले व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अपने अनुकूल करना या उसके मन

पर नियंत्रण करना होता है | कामदेव को मन्मथ कहा जाता है | जिसका अर्थ है जो मन को मथता है या मन के अंदर आकर्षण जैसे भाव पैदा करता है और व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के प्रति आकर्षित होने के लिए विवश करता है |

यहां तक तो बात ठीक थी, लेकिन प्रयोग कैसे करना है, यह अभी तक स्पष्ट नहीं था |

मैंने उनसे पूछा - माई अब अगर प्रयोग करना है तो कैसे करना होगा ?

उन्होंने बताया - इस सिद्ध हत्था जोड़ी के सामने रखकर किसी भी खाद्य पदार्थ को वशीकरण मंत्र के एक हजार आठ बार जाप करके सिद्ध करना होता है | उसके बाद यदि साध्य अर्थात वह व्यक्ति जिसे आप को आकर्षित करना है उसे वह खाद्य वस्तु खिला दी जाए तो वह निश्चित रूप से आकर्षित होता ही है |

इतना कहकर माई मुझे अपने पीछे आने का इशारा करके चल पड़ी | मैंने भी हत्था-जोड़ी को प्रणाम कर

अपने थैले में डाला और थैला साथ में लेकर उनके पीछे पीछे चल पड़ा |

उन्मत्त भैरवाय नमः

इस बार हम लोग उसी छोटे दरवाजे से बाहर निकले जहां से रेनू माई अंदर आई थी | वह रास्ता एक सीढ़ी जैसा था | उस में से उतर कर हम लोग लगभग 15 फीट नीचे उतर आए | उसके बाद एक गलियारा था | उसे गुफा कहना ज्यादा सही होगा | उस गुफा गलियारे से होते हुए हम लोग करीब 500 मीटर आगे आए | उसके बाद एक बड़ा सा गुफा का मुंह दिखाई देने लगा | उस मुहाने पर जबरदस्त भयानक आकृति वाली एक मूर्ति लगी हुई थी | उसके आसपास लाल लाल रंग का द्रव बिखरा पड़ा था | उसे देखने से ऐसा लगता था कि वहां पर अवश्य ही बलि दी जाती रही होगी | वह लाल रंग

का द्रव खून के जैसा दिख रहा था | कई देवी मंदिरों में बलि का विधान होता है | वैसे ही कई भैरव मंदिरों में भी बलि दी जाती है | संभवतः वह भयानक आकृति वाली मूर्ति भैरव के किसी उग्र स्वरूप की थी जिसे बलि दी जाती रही होगी |

गुफा से बाहर निकलने पर नदी का तट था | रेनू माई ने मुझे वहां नित्यकर्म से निवृत्त होने के लिए कहा और स्वयं दूसरी और चली गई | 10-12 घंटे लगातार बैठने की वजह से हाथ पैर दर्द कर रहे थे.....

लेकिन ! जैसा मैंने आपको बताया नदी का तट मुझे बेहद पसंद है !

वहां पहुंचते ही मुझ में एक नई ऊर्जा का संचार हो जाता है ! मैंने सारे कपड़े उतारे और पानी में छलांग लगा दी | लगभग आधा घंटा पानी में आराम से इधर से उधर लोटता रहा | ऐसा लगा जैसे फिर से मैं वापस रिचार्ज हो गया हूं |

स्नान करके मैं बाहर निकला | तभी मैंने देखा.....

सामने से रेनू माई भी स्नान करके निर्वस्त्र अवस्था में मेरी ओर आ रही थी | मैं भी निर्वस्त्र था |

अघोर साधकों के लिए देह साधना का एक माध्यम है । इसलिए वहां पर वस्त्र को विशेष आवश्यकता नहीं माना जाता है । स्त्री या पुरुष तब तक देहात्मक रूप से संलग्न नहीं होते जब तक कि कोई साधनात्मक आवश्यकता ना हो ।

इसलिए न तो मुझे रेणु माई को निर्वस्त्र देखने में कोई दिक्कत हो रही थी और ना ही उन्हें किसी प्रकार की दिक्कत थी ।

रेणु माई ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया और गुफा के मुहाने पर बने हुए भयानक आकृति वाले विग्रह के सामने जाकर पद्मासन में बैठ गई | मुझे भी पद्मासन में बैठने का इशारा किया | इसके बाद उन्होंने भगवान भैरव का ध्यान किया .....

भैरवं नमामि

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं

सं सं सं संहार मूर्ति शुभ मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बं |
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुख चौर्ध्व रोमं करालं
पं पं पं पाप नाशं प्रणमतं सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥

रं रं रं रक्तवर्णं कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा विशालं
घं घं घं घोर घोषं घ घ घ घ घर्घरा घोर नादं
कं कं कं कालरूपं धग धग धगितं ज्वलितं कामदेहं
दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल ल लुलितं दीर्घ
जिह्वाकरालं
धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुट विकृत मुखंमासुरं भीम रूपं
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपं
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रं
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ४ ॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालान्धकारं
क्षि क्षि क्षि क्षिप्र वेग दह दह दहन नेत्रं सन्दीप्यमानं
हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहन गर्जितं भूमिकंपं
बं बं बं बाललीलम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ५
॥

हम दोनों उस भयानक आकृति वाले देवता, जो संभवत: भैरव ही रहे होंगे, के सामने बैठे हुए थे | वह स्थान एक छोटे कुंड के जैसा था | जो लगभग 1 फुट गहरा रहा होगा | उसी के एक सिरे पर वह मूर्ति थी |

भैरव ध्यान के बाद उन्होंने कुछ विशेष प्रकार के मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ किया और लगभग आधे घंटे तक बेहद जोरदार आवाज में वह मंत्र जाप चलता रहा | जैसा कि मैंने पहले भी बताया था उनकी आवाज काफी कड़क थी और जब वह मंत्र उच्चार करती थी तो एक अलग ही रुद्र स्वरूप उत्पन्न होता था ।

तभी !

दाहिनी तरफ से एक बुजुर्ग महिला अपने हाथ में दो पात्र लेकर आती हुई दिखी | यह महिला भी पूर्ण निर्वस्त्र थी । उन पात्रों मे कुछ द्रव भरा हुआ था | उसने एक पात्र का द्रव माई के ऊपर उड़ेल दिया और दूसरे पात्र का द्रव मेरे ऊपर उड़ेल दिया | वह लाल रंग का द्रव था |

ऐसा लग रहा था ..... जैसे ताजा खून हो !

उसकी चिपचिपाहट को मैं महसूस कर सकता था !

माई का मंत्र जाप अभी जारी था | जैसे उन्हें इस प्रकार से द्रव डाले जाने की प्रतीक्षा रही हो .....

उनके ध्यान में कोई फर्क नहीं आया और वे उसी क्रम में मंत्र उच्चारण करती रही | हालांकि मैं हड़बड़ा गया कि अचानक सिर पर क्या गिर गया । फिर उनको देखकर मैं भी थोड़ा सहज हुआ कि हो सकता है यह किसी प्रक्रिया का अंग हो । हम दोनों के सिर पर एक एक पात्र खाली करके वह बुजुर्ग महिला वापस चली गई ।

थोड़ी देर के बाद वह फिर से दो पात्र लेकर आती हुई दिखी । उसने वे दोनों पात्र रेनुमाई के सामने रख दिए । माई ने उसे जाने का इशारा किया और वह चली गई । रेणु माई का मंत्र जाप अभी जारी था ।

लगभग एक घंटा हो चुका था ।

तभी !

हल्की हल्की हवाएं चलने जैसा आभास होने लगा !

जो धीरे-धीरे तेज होता गया ... गुफा के बाहर तेज हवाएं चलने लगी .....

थोड़ी देर में ऐसा महसूस होने लगा जैसे तूफान आने वाला है .....

बारिश होने लगी !

बिजली कड़कने की आवाज भी आई । लगभग 10 से 15 मिनट यह स्थिति रही होगी ।

अब तक माई का मंत्र जाप पूरा हो चुका था और वह सामने की मूर्ति की आंखों में त्राटक करते हुए खड़ी हो चुकी थी । ऐसा लग रहा था जैसे उस मूर्ति के अंदर प्राण आ गए हों । उन्होंने रखे गए दोनों पात्रों में से एक पात्र उठाया और उस मूर्ति के मुंह पर लगा दिया । वह मूर्ति उसको गटागट पी गई । थोड़ी ही देर में वह पात्र खाली हो गया । उन्होंने मुझे भी वैसा करने का इशारा किया ।

मैं उठा और दूसरे पात्र को मैंने उठाकर उस मूर्ति के मुंह से लगा दिया । जैसे ही मैंने उसे उसके मुख पर लगाया..... मुझे बड़े जोर का झटका लगा । ठीक वैसा ही जैसे बिजली के तारों को छूने से लगता है ।

मेरा वाला पात्र भी धीरे-धीरे खाली होता चला गया । पात्र लगभग आधा खाली हो गया, तो मूर्ति में हलचल सी हुई और कुछ क्षणों में उसने द्रव पीना बंद कर दिया ।

मेरे पात्र में लगभग एक तिहाई द्रव बचा हुआ था । मुझे समझ में नहीं आया कि मुझे क्या करना है । मैंने माई

की ओर देखा उन्होंने पात्र को वापस अपनी तरफ ले लेने का इशारा किया ।

मूर्ति की आंखों में अजीब सी चमक आ चुकी थी । ऐसा लग रहा था कि वह एकदम जीवंत हो गई हो । वह एक पुरुष की मूर्ति थी जिसका मुख मंडल बहुत ही भयानक था और बेहद क्रोध में लगता था ।

वह पूरी तरह से नग्न मूर्ति थी जिसका अंग पूरी तरह से उत्थित अवस्था में सामने की ओर तना हुआ था ....

उस मूर्ति की आंखों से कुछ रश्मियाँ सी निकली .....

जो रेणु माई और मुझ से टकराई .....

एक क्षण के लिए ऐसा लगा जैसे हम लोग प्रकाश के किसी आवरण के घेरे में आ गए हो । लगभग 5 सेकंड वह स्थिति रही होगी । उसके बाद मैं बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा.....

जब मुझे होश आया तो लगभग दोपहर हो चुकी थी । हम दोनों वही उस मूर्ति के पास ही थे । रेणु माई मेरे

सिरहाने पर बैठी हुई थी और मेरे माथे पर हाथ फेर रही थी । बाजू में ही मेरे हाथ का पात्र रखा हुआ था , उसमें जो बचा हुआ था उस द्रव को तारा माई ने मेरे मुख से लगा दिया ...

जैसे ही वह द्रव मेरे अंदर गया, मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने गरम गरम मिर्ची का घोल पिला दिया हो ।

पूरा शरीर सनसना गया और मैं उठ कर खड़ा हो गया .....

उस घोल या कहें कि द्रव के अंदर जाते ही मेरे अंदर उन्माद सा आने लगा .....

मैं कूद कूद कर नाचने लगा .....

लगभग 10 मिनट तक मैं वैसे ही नाचता रहा और सामने रेनू माई खड़े होकर मुझे देखती रही । 10 मिनट के बाद मैं शांत हुआ और उस मूर्ति के सामने दंडवत मुद्रा में लेट गया ।

मेरे दोनों हाथ उस मूर्ति के पांवों पर थे और मैं दंडवत लेटा हुआ था । रेणु माई ने मुझे अपना सामान उठाकर पीछे आने का इशारा किया । मैं अपना थैला और वस्त्र समेट कर उनके पीछे चल दिया ।

इस मूर्ति के बाई और एक छोटा सा सकरा रास्ता दिख रहा था । जिसमें से एक आदमी आराम से अंदर जा सकता था । वहां से माई अंदर चली गई । मैं भी उसके पीछे पीछे चला गया अंदर 10 बाय 10 का गुफा जैसा कमरा था । वह बुजुर्ग महिला भी बैठी हुई थी । उन्होंने उस महिला से कुछ कहा । महिला ने सहमति में सिर हिलाया और बाई तरफ बने हुए दरवाजे की तरफ बढ़ गई । रेनू माई एक पत्थर से बने आसन पर बैठ गई और मुझे सामने बैठने का इशारा किया ।

मैं जाकर उनके सामने बैठ गया । उन्होंने वज्रासन में बैठने का निर्देश दिया । मैं वज्रासन में बैठ गया । वज्रासन में दोनों घुटने मुड़े रहते हैं और कूल्हे पांव की एड़ियों के ऊपर टिके रहते हैं ।

उन्होंने अपने दोनों पांव मेरे घुटने के ऊपर रखे और मेरे सर के ऊपर हाथ रख के मन ही मन कुछ मन्त्र बुदबुदाने लगी ।

इसके बाद उन्होंने मेरे आज्ञा चक्र वाले स्थान पर अपना बाया अंगूठा लगा दिया .....

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी गर्म चीज में मेरे माथे को दाग दिया हो ।

जहां उनका हाथ लगा था । वहां का हिस्सा बेहद गर्म हो रहा है ऐसा मुझे आभास हो रहा था ।

लगभग 10 से 15 सेकंड तक यही स्थिति रही होगी ...

उसके बाद उन्होंने अंगूठे को मेरे ब्रह्मरंध्र अर्थात सिर के ऊपर के हिस्से में रख दिया ।

जैसा गरम एहसास मुझे माथे पर हो रहा था ठीक वैसा ही ऐहसास अब मेरे ब्रह्मरंध्र पर हो रहा था ।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरे सिर के अंदर मेरे मस्तिष्क के अंदर कुछ तो चल रहा है.....

उन्होंने अपने दोनों पांव मेरे घुटने के ऊपर रखे और मेरे सर के ऊपर हाथ रख के मन ही मन कुछ मन्त्र बुदबुदाने लगी ।

इसके बाद उन्होंने मेरे आज्ञा चक्र वाले स्थान पर अपना बाया अंगूठा लगा दिया .....

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी गर्म चीज में मेरे माथे को दाग दिया हो ।

जहां उनका हाथ लगा था । वहां का हिस्सा बेहद गर्म हो रहा है ऐसा मुझे आभास हो रहा था ।

लगभग 10 से 15 सेकंड तक यही स्थिति रही होगी ...

उसके बाद उन्होंने अंगूठे को मेरे ब्रह्मरंध्र अर्थात सिर के ऊपर के हिस्से में रख दिया ।

जैसा गरम एहसास मुझे माथे पर हो रहा था ठीक वैसा ही ऐहसास अब मेरे ब्रह्मरंध्र पर हो रहा था ।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरे सिर के अंदर मेरे मस्तिष्क के अंदर कुछ तो चल रहा है.....

कुछ अजीब हो रहा है ....

लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है.....

इसके बाद उन्होंने मेरे गले पर जहां एक गड्ढा सा होता है वहां पर हाथ रखा और फिर से कुछ मंत्र उच्चारण करने लगी....

इसी प्रकार से उन्होंने मेरे हृदय वाले भाग पर.....

नाभि पर अर्थात जहां जहां कुंडलिनी में चक्रों की स्थिति बताई जाती है वहां वहां अंगूठे का दबाव डालकर मंत्र जाप किया ।

इसके बाद उन्होंने मुझे घूम कर बैठने के लिए कहा । मैं उनकी तरफ पीठ करके पुनः वज्रासन में बैठ गया .....

उनके पांव का अंगूठा मेरे रीड के हड्डी के सबसे निचले हिस्से पर स्पर्श कर रहा था .....

तभी उन्होंने एक जोर की लात वहां पर मारी और मैं पलट कर सामने की तरफ जा गिरा ।

मुझे समझ में नहीं आया कि क्या हुआ ....

मैंने पलट कर देखा तो उन्होंने फिर इशारा किया कि वापस आकर उसी मुद्रा में बैठो ।

मैं फिर वापस आकर उनकी तरफ पीठ करके वज्रासन में बैठ गया ।

फिर उनके पाँव का अंगूठा थोड़े ऊपर में आया और मेरे रीढ़ की हड्डी को जोर से दबाने लगा ।

ऐसा उन्होंने मेरे रीढ़ की हड्डी के 1-1 गोले के साथ किया ।

मुझे ऐसा लग रहा था कि वे रीड की हड्डी के हर टुकड़े को अपने पैर के अंगूठे से दबा रही थी ।

इस प्रकार दबाते दबाते वह मेरे हृदय के पीछे वाले हिस्से में जब पहुंची तो उन्होंने फिर से एक जोरदार लात मारी ।

मैं फिर से पलट कर गिरा ।

उठकर फिर मैं वापस आकर उसी स्थान पर वज्रासन में उनकी ओर पीठ करके बैठ गया ।

उनका पांव अब मेरी गर्दन के पास तक आया और वह खड़ी हो गई ।

उन्होंने अपना पांव मेरे गले के पास में रखकर उसे दबाना चालू किया । उन्होंने इतना दबाया कि मेरा सर नीचे होते होते जमीन पर टच होने लगा । मेरा माथा जमीन पर था और उनका पांव मेरे गर्दन और सिर के बीच में रखा हुआ था । यह स्थिति लगभग 10-15 सेकंड रही होगी । उसके बाद उन्होंने अपना पांव हटा लिया ।

अब उन्होंने मुझे सीधा लेट जाने के लिए कहा । अब मैं जमीन पर लेट गया । उन्होंने अपने पांव से मेरे सिर के ऊपरी हिस्से में भी चोट की । उसके बाद दाहिना पैर मेरे माथे के ऊपर रख वह खड़ी हो गई ।

इस सारी क्रिया में उनके मंत्रों का उच्चारण लगातार जारी था । इतना होने के बाद उन्होंने हवा में अपना हाथ बढ़ाया और उनके हाथ में भस्म आ गयी । उन्होंने भस्म

को फूंक मारकर मेरी ओर उड़ा दिया । लगभग मेरे शरीर के हर हिस्से में वह भस्म थोड़ी-थोड़ी जाकर चिपक गई ।

अब मैं श्मशान भस्म लगाया हुआ अघोरी बाबा लग रहा था .....

मदन कामेश्वर गुटिका

उन्होंने मुझसे कहा - बेटा मदन कामेश्वर गुटका का मिलना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है | जिसको तुम अपने साथ लेकर भी चल सकते हो और अगर चाहो तो मैं इसे तुम्हारी जंघा के अंदर स्थापित भी कर सकती हूं ।

मैंने कहा - जैसा आप उचित समझें वैसा करें ।

उन्होंने थैली के अंदर से मदन कामेश्वर गुटिका बाहर निकाली । दाहिने हाथ को ऊपर उठाया तो चमकता हुआ चाकू उनके दाहिने हाथ में आ गया । सेकंड के आधे हिस्से में उन्होंने मेरी जांघ पर एक चीरा लगा दिया । वह चीरा लगभग 3 इंच लंबा था । उसमे से खून बहने लगा ।

मुझे दर्द हो रहा था.....

उन्होंने उस गुटीका को उस चीरे के ऊपर रख दिया । उसके बाद कुछ विचित्र प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करने लगी....

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वह गुटिका मेरी जाँघ के अंदर धसती जा रही हो ...

ठीक वैसे ही जैसे कोई मशीन लकड़ी के तखत में छेद करती हुई अंदर घुसती है, और नीचे पत्थर या किसी कड़े सतह पर जाकर रुक जाती है । वैसे ही वह गुटीका अंदर घुसते घुसते शायद मेरे हड्डियों के पास जाकर रुक गई .....

जाँघ से रक्त बह रहा था ....

जाँघ के नीचे माई ने एक पात्र लगा लिया था बहता हुआ खून उस पात्र में इकट्ठा हो रहा था । लगभग आधा लीटर खून इकट्ठा हो गया होगा । जब तक कि वह गुटिका पूरी तरह से अंदर नहीं घुस गई ।

उसके बाद माई ने कटे हुए घांव के दोनों हिस्सों को चिपकाया और कोई मंत्र पढ़ने लगी । वह मंत्र शाबर मंत्र जैसा लग रहा था । मंत्र को उन्होंने तीन बार पढ़कर घांव पर फूंक मारी । उसमे से खून बहना बंद हो चुका था । चीरा अभी दिख रहा था लेकिन खून नहीं बह रहा था ।

वह बुजुर्ग महिला कुछ पत्तियां लेकर तब तक आ चुकी थी । उनको घांव के ऊपर लपेट दिया और अमरबेल जैसे किसी नीले रंग की बेल को उसके चारों तरफ बांध दिया ।

कुछ देर में वो पत्तियां मेरी चमड़ी से चिपकती हुई सी लगी । फिर उन्होंने उस पात्र में रखे हुए रक्त को अपनी उंगलियों में लेकर पत्तियों के ऊपर हल्के हल्के से लगाना चालू कर दिया ।

पत्तियां करीब करीब 4 इंच चौड़ी थी और एक फुट लम्बी थी । उन्होंने सारी पत्तियों को ऊपर से रक्त से गीला कर दिया ।

उसके बाद उन्होंने एक जड़ी मुझे सूँघने को दी । मैंने उस जड़ी को सूँघा ...

उसकी खुशबू मुझे बड़ी मादक सी लगी ....

मैंने उसे दो-तीन बार सूँघा.....

उसके बाद मुझे बेहोशी छाने लगी और मैं होश खो बैठा ।

वह समय लगभग दोपहर का था जब यह घटना हुई | जब मुझे होश आया शाम हो चुकी थी | हल्का हल्का अंधेरा चारों और छाया हुआ था | वह बुजुर्ग महिला वहां पर बैठी हुई थी | उसने मुझे नदी में स्नान करके आने के लिए कहा |

मैं जाकर नदी में स्नान करके वापस लौटा | पट्टी अभी भी बंधी हुई थी | जब मैं वापस आया तो उसने मुझे चबूतरे पर लेटने के लिए कहा | मैं वहां पर लेट गया |

उसके बाद उसने मेरे पांव की पट्टी खोली और किसी काले रंग के पत्ते का रस निचोड़ कर उस पर डाला और

मलने लगी | लगभग 5 मिनट मलने के बाद उसने मुझे पुनः स्नान करके आने के लिए कहा | घाँव वाला हिस्सा पत्ते के रस की वजह से पूरा काला काला दिखाई दे रहा था |

मैं फिर से नहा कर लौटा जब मैं नहा कर नदी से निकला तो मैंने अपने घांव की तरफ देखा | वह घांव लगभग सूख चुका था | सिर्फ चीरे की एक लाइन बस दिखाई दे रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे फेवीक्विक डालकर चिपका दिया गया हो |

जब मैं वापस उस मूर्ति के पास से होता हुआ उस गुफा में आया तब तक रेणु माई भी वापस आ चुकी थी | उन्होने मुझे चबूतरे पर लेट जाने का इशारा किया | मैं जाकर चबूतरे पर लेट गया | उन्होंने चीरे वाले स्थान पर अपना बाया हाथ रखा और दाहिने हाथ मेरे माथे पर रख के कुछ मंत्र उच्चारण किया | उसके बाद उन्होंने मुझे सीधे खड़े हो जाने के लिए कहा | मैं जमीन पर खड़ा हो गया |

कामेश्वर साधना

उन्होंने कहा - गुटिका तुम्हारी जांघ में मैंने स्थापित कर दी है | अब जब भी तुम्हें इसकी आवश्यकता होगी अपनी जांघ पर बाया हाथ रख कर तीन बार कामेश्वर मंत्र का उच्चारण करना है | आज रात्रि को तुम्हें इस कामेश्वर मंत्र को जप कर सिद्ध करना होगा | फिर उन्होंने मुझे मंत्र बताया

|| क्लीं कामेश्वराये नमः ||

रेणु माई ने कहा - यह मंत्र काम के देवता कामदेव का मंत्र है | सारी वाममार्गी साधनाओं में युगल साधना की जाती है, इसलिए इन सारी साधना में उनकी कृपा और उनका मंत्र जाप होना अनिवार्य है | उनकी कृपा से ही बिना विचलित हुए इस प्रकार की साधना संपन्न की जा सकती हैं |

कामदेव को भगवान शिव ने भस्म कर दिया था और उनकी देह समाप्त हो गई थी | इसलिए उन्हें बिना अंग का या अनंग भी कहा जाता है | शरीर ना होने के बावजूद यह पूरी सृष्टि और पूरी मानव जाति उसी कामदेव के प्रभाव में जीती है | अगर तुम देखो तो

समाज में सारी प्रक्रियाएं उसी कामदेव के प्रभाव से संचालित होती हैं | स्त्री और पुरुष के बीच के आकर्षण का मूल भी वही है ....

विवाह नाम की जो संस्था है उसे कहें या फिर स्त्री और पुरुष के आपसी संबंध को इसके मूल में कामदेव ही क्रियाशील होते हैं | जहां से एक नए जीव की उत्पत्ति होती है और गृहस्थ का मायाजाल उसी के इर्द-गिर्द बुना हुआ है | दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह पूरा संसार जिस कारण से क्रियाशील होता है वह है –

|| कामदेव ||

इसलिए उनकी आराधना उनकी सिद्धि उनका आशीर्वाद आवश्यक होता है | तभी साधक इन साधनाओं में सिद्धि सरलता से प्राप्त कर पाता है | अन्यथा उनके कामबाण से जब भगवान शिव जैसा महा सिद्ध नहीं बच पाया तो आम साधकों की तो कोई औकात ही नहीं है | इसलिए तुमको यह साधना अनिवार्य रूप से सिद्ध करनी है |

रेणु माई ने आगे कहा - इसे सिद्ध करने के लिए इस मंत्र का तीन लाख जाप करना है | यदि तुम इस साधना को युगल रूप में संपन्न करोगे तो इसका दशांश अर्थात तीस हजार मंत्र जाप करना पर्याप्त होगा | लेकिन वह थोड़ा सा कठिन है यह ध्यान रखना |

मैंने अभी तक किसी प्रकार की युगल साधना नहीं करी थी इसलिए मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं क्या करूं ? मेरी उलझन का समाधान भी रेणु माई ने ही किया | उन्होंने कहा - महा श्यामा साधना करने से पहले युगल साधना कर लेना तुम्हारे लिए मानसिक दृढ़ता प्रदान करने वाला होगा | मेरी राय में तुम्हें यह साधना युगल रूप में ही संपन्न करनी चाहिए |

मैंने सहमति में सिर हिलाया | रेनू माई ने कहा - ठीक है तुम तैयार हो जाओ | आज रात 9 बजे से तुमको इस साधना में बैठना है | यह साधना लगभग 36 घंटे की होगी | इस साधना के दौरान नींद और भूख प्यास ना लगने के लिए तुमको मैं कुछ औषधियां भी दूंगी |

वृद्धा का यौवन

उन्होंने मुझे स्नान करके आने के लिए कहा और उस बुजुर्ग महिला को भी स्नान करके आने के लिए कहा | हम दोनों स्नान करके लौटे | माई ने मुझे श्वास खींचकर कुंभक करने के लिए कहा | कुंभक का मतलब होता है श्वास को अंदर लेकर उसे अपने शरीर के अंदर ही रोक कर रखना | मैं नियमित योगाभ्यास तो नहीं करता था फिर भी प्राणायाम करता था और 1 से 2 मिनट तक अपनी सांस रोक पाता था | उन्होंने मुझे उस चबूतरे के एक सिरे पर बैठकर कुंभक करते रहने के लिए कहा | मैं सांस खींचकर रखता और फिर छोड़ देता ऐसे ही चलता रहा |

रेणु माई अपने पत्थर वाले आसन पर बैठ चुकी थी | वह बुजुर्ग महिला भी स्नान करके उस कमरे में आई और रेणु माई के सामने पत्थर के आसन के सामने बैठ गई | रेनू माइ ने उसके सिर पर हाथ रखा और मंत्र जाप करना प्रारंभ कर दिया |

वह बुजुर्ग महिला कुछ साठ पैंसठ साल की रही होगी | उसके बाल आधे से ज्यादा सफेद थे | चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थी | सारे शरीर की चमड़ी ढीली थी | दोनों नितंब और स्तन लटके हुए थे | वह काफी दुबली पतली थी और गहरे काले रंग की थी | कुल मिलाकर आप कह सकते हैं कि जैसे सामान्य वृद्ध महिला होती है, वैसी एक वृद्ध महिला थी |

माई ने विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करते हुए उसके शरीर पर कलश से जल डाला | जल धीरे-धीरे उनके बालों से होता हुआ नीचे बह रहा था | मैं आश्चर्य से लगभग चबूतरे से कूदने की स्थिति में आ गया, जब मैंने देखा कि उनके सफेद बाल धीरे-धीरे काले होने लगे | कलश का जल समाप्त होते होते उनके सिर के सारे बाल काले हो चुके थे |

अब माई ने उनको खड़ा होने के लिए कहा | वह रेनू माई के सामने सीधी खड़ी थी | रेनू माई के दोनों पांव उनके दोनों पांव पर रखे हुए थे | दाहिना हाथ का अंगूठा उनकी नाभि के पास स्पर्श कर रहा था और दूसरा हाथ पीठ के पिछले भाग पर था |

तंत्र का चमत्कार कहिए या विद्या कहिए जो दृश्य मैंने उसके बाद देखा, वह मेरी कल्पना के अंतिम छोर से भी आगे का था.....

माई का मंत्र जाप चल रहा था.....

धीरे-धीरे उस बुजुर्ग महिला की चमड़ी में कसावट आती जा रही थी .....

मैं अपने सामने देख रहा था कि उनके शरीर की जो झुर्रियां थीं वह धीरे-धीरे गायब होती जा रही थी | उसमें जो सलवटे पड़ी हुई थी वह सीधी होती जा रही थी | उसके बाद मेरे देखते-देखते उनके नितंबों ने विकसित होना चालू कर दिया और वह फैलने लगी | उनकी पीठ मेरी तरफ थी इसलिए मैं उनके पीछे का हिस्सा देख पा रहा था | मैंने देखा उनके नितंब धीरे-धीरे सुगठित होने लगे | उनके बाल पहले ही काले हो चुके थे | अब वह किसी युवा स्त्री के जैसे दिख रही थी |

मुझे अब और ज्यादा आश्चर्य हो रहा था ....

उम्र का बढ़ना एक सामान्य घटना है | वृद्ध होना भी एक सामान्य घटना है क्योंकि समय के साथ हर कोई वृद्ध होता ही है | लेकिन एक वृद्ध महिला का वापस जवान हो जाना .....

यह असंभव सी घटना थी..... जिसे मैं अपने सामने घटित होते हुए देख रहा था.....

लगभग आधे घंटे का समय इस पूरी प्रक्रिया में लगा होगा ...

उन्होंने अपने पास रखे हुए पात्र में से थोड़ी सी भस्म निकाली और उस पर मंत्र जाप करके उस महिला की तरफ उसे फेंक दिया | शायद यह आखिरी प्रक्रिया थी |

उनके शरीर में आमूलचूल परिवर्तन आ चुका था | पीछे से वह किसी युवती का शरीर दिखाई देता था | जिसके बाल पीठ तक बिखरे हुए थे | उस का रंग अवश्य काला था लेकिन देहयष्टि एकदम सुगठित हो गई थी |

अब माई अपने आसन से उठी और उसे अपने पीछे आने का संकेत किया |

अब वह दोनों मेरी ओर चबूतरे की तरफ बढ़ने लगी |

थोड़ा करीब आने पर मुझे उसका चेहरा और सामने का हिस्सा दिखाई दे रहा था !

उसके चेहरे की सारी झुर्रियां गायब हो चुकी थी !

सोलह सत्रह वर्ष की युवती के जैसा सुंदर मनमोहक स्वरूप दिख रहा था |

जो स्तन लटके हुए थे, वह परिपुष्ट अवस्था में आ चुके थे |

उसका संपूर्ण शरीर मादक यौवन से युक्त हो चुका था | वह बेहद मादक चाल से चलती हुई चबूतरे की तरफ आ रही थी | अब मेरे मन में उसे देखकर आकर्षण का भाव पैदा होने लगा था |

माई ने हम दोनों को ऊपर बैठने के लिए कहा | हम दोनों अब चबूतरे के ऊपर बैठे हुए थे | चबूतरा लगभग 7 फीट लंबा और 5 फीट चौड़ा रहा होगा | वह काले रंग के पत्थर का बना हुआ था | संभवतः पहाड़ी को काट

कर या छीलकर बनाया गया होगा | उसके नीचे वाले हिस्से में तीन आले बने हुए थे | यह आले लगभग 1 फुट चौड़े और 6 से 8 इंच गहरे थे | उनमें तीन दीपक रखे हुए थे | यह दीपक ठीक वैसे थे जैसे अखंड ज्योति जलाते समय जलाए जाते हैं | बड़े-बड़े से ! जिनमे किलो भर तेल भरा हुआ था | मोटी बत्तियाँ डली हुई थी, जिससे लग रहा था कि वह काफी देर तक चलेंगे |

रेणु माइ ने हम दोनों को कुंभक करते रहने के लिए कहा | लगभग सौ बार हम दोनों ने कुंभक किया होगा | उसके बाद रेणु माइ ने रेचक करके सांस रोक कर रखने के लिए कहा | रेचक का मतलब होता है सांस बाहर छोड़कर उसे बाहर ही रोके रखना | उन्होंने लगभग 50 बार रेचक कराया होगा |

उसके बाद उन्होंने चबूतरे के नीचे हाथ डाला और एक छोटा सा पीतल का पात्र निकाला यह पात्र ऊपर से बंद था | उन्होंने उसका ढक्कन खोला और हमारे मुख में उस द्रव की पाँच बूंदे डाल दी और उसे मुंह में ही रखे रहने के लिए कहा |

उसके बाद उन्होंने थैले में से दूसरा पात्र निकाला और उसमें से तीन तीन बूंदे हमारे मुंह में डाल दी उन्होंने फिर तीसरा पात्र निकाला और उसमें से एक एक बूंद हमारे मुख में डाल दी | तीन प्रकार के द्रव हमारे मुंह में पडे थे |

कुछ सेकंड में उसमें से धुआं जैसा कुछ निकलने लगा | जैसे ही धुआं निकला माई ने द्रव को निगल लेने के लिए कहा | हम लोगों ने मुंह बंद कर लिया और द्रव को निगल गए | वह धुआँ नाक से बाहर आने लगा और थोड़ी देर में सब कुछ शांत हो गया |

रेनू माई ने बताया कि यह द्रव विशेष प्रकार की औषधियों से मिलाकर बनाया गया है और इसके पीने से कुछ देर में शरीर का सारा मल मूत्र बाहर हो जाएगा और उसके बाद आसन पर काफी समय तक बैठे रहना आसान होगा | उन्होंने हमें नदी की तरफ जाने के लिए कहा | हम दोनों बाहर निकल गए |

नदी के तट तक पहुंचते-पहुंचते पेट में भयंकर गुड़गुड़ाहट चालू हो चुकी थी | शौच हो जाने के बाद भयंकर जोर

से प्यास लगी | लगभग एक लीटर पानी पीने के बाद ऐसा लगा जैसे तृप्ति हुई हो | लेकिन पानी जैसे ही पेट तक पहुंचा फिर से पेट साफ हो गया | ऐसा दस ग्यारह बार हुआ | आखरी बार तो ऐसा लगा कि जैसे जो पानी पिया हो वही बाहर निकल गया | शरीर पूरा निचुड़ गया हो ऐसा लग रहा था, लेकिन बेहद हल्का भी महसूस हो रहा था | हम लोगों ने थोड़ी देर और प्रतीक्षा की जब लगा किया कुछ नहीं हो रहा है तो हम लोग स्नान करके वापस चबूतरे के पास पहुंचे |

रेनू माई ने फिर से अपने थैले में से एक नीले रंग का लगभग मटर के दाने के बराबर का एक फल हम दोनों को दिया और उसे निगल लेने के लिए कहा | हम दोनों ने उसे निगल लिया | उस दाने को निगलने के 10 15 मिनट के बाद शरीर में फिर से स्फूर्ति आने जैसा एहसास होने लगा | ऐसा लगा जैसे ताकत वापस लौट गई हो |

माई ने आगे बताया - यह फल साल में केवल एक बार लगता है और रात के समय ही उसे तोड़ा जा सकता है | दिन भर इसके आसपास जहरीले सर्प घूमते रहते हैं | वे दिन मे इसे तोड़ने वाले को काट लेते हैं केवल अर्धरात्रि

के एक घटी में वे उस पेड़ को छोड़ते हैं और उस समय इसे तोड़ लेना पड़ता है | यह वटी 1 हफ्ते तक भोजन ना करने पर भी शरीर में ताकत और सामर्थ्य बनाए रखती है | मल मूत्र की इच्छा भी नहीं होती है | इस प्रकार की अनेक औषधियां और जड़िया जंगल में पाई जाती है | इसका उपयोग तांत्रिक साधक अपनी साधनाओं के लिए करते हैं, क्योंकि सामान्य अवस्था में इतने लंबे समय तक बैठ पाना असंभव होगा ....

वाममार्गी साधना

माई ने बताया - साधना प्रारंभ करने का समय हो चुका है । यह वाममार्गी साधना है | जिसमें देह को साधना का माध्यम बनाया जाता है | यह तुम्हारे मानस में स्पष्ट होना चाहिए कि जिस प्रकार हम पूजन में यंत्र और माला तथा इष्ट की प्रतिमा का उपयोग करते हैं , उसी प्रकार से इन साधनाओं में हम अपनी देह का भी साधना के माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं | वैसे ही श्रद्धा ! वैसा ही विश्वास ! और वैसा ही भाव ! तुम्हारे अंदर होना चाहिए | इसके अंदर जितना कम से कम अंश वासना का होगा साधना में उतने ही उच्च स्तर की सफलता प्राप्त होगी |

स्त्री पुरुष सम्बन्धों के दौरान स्खलन की अवस्था में जो क्षणिक आनंद प्राप्त होता है उस आनंद की विस्तृत अवस्था ही वास्तव में इस प्रकार की साधनाओं का मूल है | जो तुम्हें समाधि के स्तर तक पहुंचाने में सक्षम है |

शास्त्रों में भी उस आनंद को जो आपसी संसर्ग में आता है ब्रह्मानंद सहोदर कहा गया है | इसकी पूर्ण स्थिति ब्रह्मानंद है जिसे समाधि में प्राप्त किया जा सकता

है और इन साधनाओं के माध्यम से समाधि का मार्ग प्रशस्त होता है |

सहज भाव से तुमको अपनी देह को माध्यम बनाकर उस ओर बढ़ना है | अब तुमको त्रिशला के साथ मंत्र जाप प्रारंभ करना है । मंत्र जाप करते करते एक ऐसी स्थिति आएगी जब तुम्हें देह पर नियंत्रण छुटने जैसा आभास होगा । वही स्थिति सबसे खतरनाक है उससे तुमको बचना है । तुम्हारे शरीर में स्थित मदन कामेश्वर गुटिका इसमें तुम्हारी मदद करेगी । जब बहुत ज्यादा विचलन की स्थिति हो जाएगी तो गुटिका वाली जगह पर हाथ रखकर तीन बार गुरु मंत्र का उच्चारण कर लेना स्थिति सम्भल जाएगी ।

तुम दोनों एक दूसरे का अंग पूजन करोगे और उसके बाद इस साधना में संलग्न होना है । इस की विधि त्रिशला तुमको समझाएगी । इतना बता कर रेनुमाई वह कक्ष छोड़ कर चली गई ।

त्रिशला ने हवा में हाथ घुमाया तो कुमकुम से भरा हुआ एक पात्र उसके हाथ में आ गया । उसने मुझसे कहा -

मैं तुम्हारा पूजन कर रही हूं ! उसके बाद तुमको मेरा अंग पूजन करना है ।

उसने मुझे चबूतरे पर लेट जाने के लिए कहा । मैं पीठ के बल लेट गया | वह मेरे पांव के अंगूठे से प्रारंभ करके मेरे शरीर के सभी अंगों पर उसी मंत्र का जाप करते हुए बिंदी लगाने लगी । सबसे पहले उसने बाएं पांव के अंगूठे में बिंदी लगाई । उसके बाद दाएं पांव के अंगूठे में बिंदी लगाई । इसी प्रकार से हर एक उंगली में बिंदी लगाने के बाद धीरे-धीरे घुटने, जांघ, पृष्ठ भाग से होते हुए मेरे माथे तक पहुंची । माथे पर उसने तिलक लगाया और मुझे पलट जाने के लिए कहा । मेरे पलटने के बाद उसने फिर से मेरे पांव के निचले हिस्से से बिंदी लगाते हुए जाँघ, रीढ़ की हड्डी, कंधा, गला होते हुए वापस सिर के ऊपरी हिस्से तक मंत्र जाप करते हुए कुमकुम से बिंदी लगाइ ।

इतना करने के बाद उसने मुझे उसी प्रकार से मंत्र जाप करते हुए बिंदी लगाते पूजन करने के लिए कहा । मैंने भी उसके बाएं पांव से प्रारंभ किया और मंत्र बोलकर बिंदी लगाते हुए उसके शरीर का भी पूजन संपन्न किया

। इस पूरी प्रक्रिया में लगभग आधे घंटे का समय लगा होगा ।

हम दोनों फिर आमने सामने बैठे । उसने मेरे अंग को स्पर्श करके कुमकुम प्रदान किया और मेरे सामने साष्टांग दंडवत मुद्रा में लेट गई । उसके उठने के बाद मैंने भी उसी प्रक्रिया को दोहराया और उसे साष्टांग दंडवत प्रणाम किया ।

यह तंत्र क्षेत्र की विशिष्टता है कि यहां पर पुरुष और स्त्री साधक एक दूसरे को अपने ही समान मानते हैं और सम्मान देते हैं । पुरुष को शिव का स्वरूप माना जाता है । भैरव स्वरूप माना जाता है । वही स्त्री को शक्ति का स्वरूप माना जाता है । भैरवी का स्वरूप माना जाता है । दोनों ही सम्माननीय होते हैं, इसलिए इस प्रकार की तंत्र साधना में भी दोनों के शरीर को शिव और शक्ति का स्वरूप मानकर उनका पूजन संपन्न किया जाता है ।

इतना होने के बाद अब पूजन का समय था । सबसे पहले गुरु पूजन संपन्न हुआ । गुरु पूजन करने के बाद गणपति भैरव और शिव शक्ति का पूजन संपन्न किया

। वह पूरा पूजन त्रिशला ने संपन्न किया । उसके मंत्रोच्चार से लग रहा था कि वह एक सिद्ध साधिका है । ऐसा लग रहा था जैसे कई सालों का पूजन का अनुभव रहा होगा ।

गुरु पूजन करने के बाद उन्होंने पृथ्वी का विशेष प्रकार का पूजन किया और दोनों एक दूसरे को काटते हुए त्रिकोण बनाए । हमको इसी त्रिकोण के ऊपर बैठकर पूजन संपन्न करना था । आसन के चारों तरफ द्वारपाल क्षेत्रपाल सहित सभी देवताओं का पूजन पूरे मंत्रोचार के साथ संपन्न किया । हर देवता के लिए कुमकुम समर्पित किया ।

जिसके बाद उन्होंने उस कुमकुम को लेकर चबूतरे के चारों तरफ एक घेरा बनाया । मैं बैठकर यह सब देख रहा था । घेरा बनाते समय हर तीन कदम के बाद वह बाएं पैर से जमीन पर तीन बार ठोकर मारती थी, और फिर आगे बढ़ जाती थी । इस प्रकार से उन्होंने पूरा चबूतरा चारों तरफ से कुमकुम के घेरे से बांध दिया । इतना करने के बाद उन्होंने कुमकुम के पात्र को पुनः हवा में उठाया और वह पात्र हवा में विलीन हो गया ।

उसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख करके मंत्र जाप किया । मंत्र जाप पूर्ण होते होते एक रक्तिम लाल रंग की लगभग 5 फुट ऊंची पुरुष आकृति स्पष्ट होने लगी । आकृति के एक हाथ में भाले जैसा कोई अस्त्र था और दूसरे हाथ में तलवार थी । उसका चेहरा बहुत भयानक था और बाहर लगी हुई मूर्ति से मिलता-जुलता था । त्रिशला ने प्रणाम किया | उनकी देखा देखी मैंने भी उसे प्रणाम किया । उसने आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाया ।

त्रिशला ने बताया - साधना प्रारंभ करने के लिए साधना के अधिष्ठाता देवता उन्मत्त भैरव की अनुमति मिल चुकी है | भैरव इस संसार की क्रियात्मक शक्ति है | जैसा कि तुम जानते हो भगवान शिव सदैव ध्यानमग्न होते हैं | अत्यंत विशिष्ट स्थिति में जब संसार पर किसी प्रकार की आपदा आने वाली होती है या प्रलय की स्थिति होती है तभी भगवान शिव अपना ध्यान भंग करके क्रियाशील होते हैं । संसार की अन्य क्रियाओं के लिए उनका भैरव स्वरूप ही सक्रिय और क्रियाशील होता है । इनमें से उन्मुक्त भैरव सबसे गोपनीय भैरव है । जिसके विषय में केवल वाममार्गी साधकों के बीच में ही जानकारी है ।

उसी भैरव स्वरूप का आशीर्वाद और अनुमति मिलने के बाद हम लोग यह साधना प्रारंभ करने जा रहे हैं |

चबूतरे पर यंत्र बना हुआ था | वह यंत्र किसी सामान्य यंत्र की ही तरह था | एक त्रिकोण की नोक ऊपर की तरह थी और दूसरे त्रिकोण की नोक नीचे की तरफ थी | इस प्रकार वे दोनों त्रिकोण एक दूसरे को काट रहे थे | उनके काटने से एक षटकोण बन गया था | उसी षटकोण के बीच में बैठकर साधना की जानी थी ।

त्रिशला ने स्पष्ट किया - यह षटकोण तंत्र के षट कर्मों का भी प्रतीक है । इस प्रकार के यंत्र का प्रयोग षट कर्म में सभी मनोकामनाओं के लिए किया जा सकता है | केवल उनका मंत्र और क्रियाविधि अलग अलग हो जाती है । इस यंत्र के मध्य भाग में प्राण प्रतिष्ठा मंत्रों के साथ जब बिंदु स्थापना की जाती है तब यह यंत्र जागृत हो जाता है । मैं वही करने जा रही हूं | जब मैं इसके मध्य में बिंदी लगाऊंगी तब तुम उस बिंदी के ऊपर बैठ जाना । इतना कहकर त्रिशला अपने कार्य में लग गई |

उसने आकाश पाताल सहित दसों दिशाओं में देखकर मंत्रों का उच्चारण किया । उसके बाद कामाख्या कवच का पाठ करते हुए उन दोनों त्रिकोण के बीच बने हुए षटकोण के मध्य में बिंदी लगा दी । बिंदी लगाने के बाद मैं उसके ऊपर चढ़कर बैठ गया । उस यंत्र पर अब मैं बैठा हुआ था । त्रिकोणों के कटने से जो 6 छोटे त्रिकोण बने थे, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण में त्रिशला ने अलग-अलग मंत्रों से देवताओं की स्थापना की । उसके बाद वह भैरव स्तुति करने लगी । भैरव स्तुति पूर्ण होते होते मेरा अन्ग पूर्ण उत्थित अवस्था में आ गया । ध्यान पूरा हो जाने के बाद वह गजतुण्ड मुद्रा में प्रवेश करते हुए मेरे ऊपर बैठ गई और मंत्र जाप प्रारंभ हो गया ।

पूरी गुफा मंत्र उच्चारण से हल्के हल्के गूंज रही थी । हम दोनों संयुक्त रूप से मन्त्र जाप कर रहे थे । लगभग एक लय मे मंत्रोचार हो रहा था | इस मंत्र को पढ़ने में लगभग यह स्थिति चलती रही और हम दोनों का मंत्र जाप भी चलता रहा | बीच-बीच में मुझे अनियंत्रित होने का आभास होता तो मैं अपनी जंघा पर स्थित गुटका पर हाथ रख गुरु मंत्र का उच्चारण करता | जिससे मुझे

अपने आप को नियंत्रित रखने में मदद मिलती | एक डेढ़ घंटा जब मंत्र जाप हो गया तो लगभग शरीर पर नियंत्रण आने लगा | हम दोनों का मंत्र जाप धीरे धीरे तेज होने लगा | मंत्र की ध्वनिया पूरी गुफा में गूंज रही थी | ऐसा लग रहा था जैसे हर पत्थर उसी मंत्र का उच्चारण कर रहा हो |

इस प्रकार मंत्रोच्चार करते करते सुबह हो गई | धीरे धीरे हम दोनों के शरीर में कुछ तरंगे सी प्रवाहित होने जैसा आभास होने लगा | मेरा शरीर धीरे-धीरे गर्म होने लगा | ऐसा लग रहा था जैसे बुखार हो गया हो | मेरा शरीर जहां गर्म होता जा रहा था | त्रिशला का शरीर ठंडा होता जा रहा था | ऐसा लग रहा था जैसे उसके शरीर के अंदर की ऊष्मा मेरे अंदर प्रवेश कर गई हो | हम दोनों के मुख से हल्के हल्के मंत्र जाप हो रहा था |

त्रिशला की गतिविधियों से ऐसा लग रहा था कि वह इस साधना में पहले ही सिद्ध हो | उनके चेहरे पर एक अपूर्व शांति बिखरी हुई थी | वह बेहद नियंत्रित अवस्था में अभी तक बैठे हुई थी | जबकि मैं कई बार अपने आपको विचलित महसूस कर रहा था और आंखें

चुराने की कोशिश करता था | लेकिन उनकी आंखें लगातार मेरी आंखों देखती हुई थी | उन आंखों में शांति के भाव थे | सहज रूप से वह बैठी हुई थी |

हो सकता है पहली बार होने की वजह से मुझे इस प्रकार की अनुभूति हो रही थी | या पुरुष होने की वजह से मैं ज्यादा अनियंत्रित और वह स्त्री होने की वजह से ज्यादा नियंत्रित अवस्था में रही हो |

जो भी कारण हो शुरू के कुछ घंटे मेरे लिए तलवार के ऊपर चलने जैसे रहे | मैं बहुत मुश्किल से अपने आप को नियंत्रित कर पाया | उसके लिए मैं अपनी जंघा पर जो गुटिका स्थापित हुई थी उसे बेहद महत्वपूर्ण मानता हूँ | जिस स्थिति की मैं बात कर रहा हूं उस स्थिति में अपने आपको इतने लंबे समय तक नियंत्रित रख पाना बेहद मुश्किल है | या यूं कह लीजिए कि सामान्य परिस्थितियों में यह संभव ही नहीं है |

सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि जो स्थिति मेरे अंग की भैरव ध्यान के बाद बनी थी वही स्थिति लगातार बनी हुई थी | यह मेरे लिए बेहद आश्चर्यजनक बात

थी | जो पुरुष है वह जानते होंगे कि ऐसा होना संभव नहीं है, जो विवाहित है वह भी जानते होंगे कि किसी पुरुष में इस प्रकार से स्थिति नहीं बनती है | जिस प्रकार के असामान्य अभूतपूर्व और अद्भुत घटनाओं का साक्षी होता जा रहा था उसमें यह भी एक अद्भुत तथा अविश्वसनीय स्थिति थी | पिछले 5 घंटों से वही स्थिति बनी हुई थी |

मंत्र जाप चलता रहा.....

रात का समय था और गुफा में केवल उन तीन दीपकों का प्रकाश था, जो आले के नीचे जल रहे थे | अचानक कमरे में काले रंग का धुआं भरने लगा !

धुआँ भरते भरते हुए यह स्थिति हो गई कि दीपक का प्रकाश भी केवल एक बिंदु जैसा दिखाई दे रहा था और पूरा कमरा काला दिखाई दे रहा था .....

गुफा की दीवारें भी काली थी .....

इसलिए ऐसा प्रतीत होता था जैसे हम किसी काले बक्से में बंद हो गए हैं | इसमें विशेष बात यह थी कि

काला धुआं होने के बावजूद हम लोग आसानी से सांस ले पा रहे थे | दम घुटने जैसा आभास नहीं हो रहा था | यह स्थिति लगभग आधे घंटे तक रही होगी |

आधे घंटे के बाद वह कमरा सुनहरे रंग के प्रकाश से जगमगा उठा और एक क्षण के लिए भगवती महाकाली का जाज्वल्यमान स्वरूप उस गुफा में प्रकट हुआ और विलुप्त हो गया |

उसके बाद रात भर कुछ विशेष घटना नहीं हुई और उसी प्रकार संयुक्त अवस्था में मंत्र जाप चलता रहा | इसमें खास बात यह थी कि लगभग हर आधे घंटे के बाद तीव्र संघात की स्थिति बनती थी जो लगभग 5 से 10 मिनट तक चलती उसके बाद फिर से स्थिर अवस्था में मंत्र जाप चालू हो जाता ....

धीरे धीरे सुबह का उजाला फैलने लगा ...

रेणु माई तभी उस कमरे के अंदर प्रवेश करती हुई दिखी ! उन्होंने हम दोनों की स्थिति पर एक नजर डाली और संतुष्टि का भाव चेहरे पर लेकर हम दोनों को

आश्वस्त करती हुई वहां से चली गई ! अर्थात हम दोनों की साधना ठीक चल रही थी | मंत्र जाप जारी था | धीरे-धीरे समय आगे की ओर बढ़ रहा था .....

ध्यान

सूरज की किरने धीरे-धीरे प्रखर होती जा रही थी | जो इस बात का संकेत दे रही थी कि धूप बढ़ रही है | लगभग दोपहर का समय रहा होगा अंदाजन कहो तो 12 या 1 बजे होंगे जब अचानक तीव्र झटका त्रिशला ने दिया और उसके साथ ही मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे मूल स्थान से तरंगे निकलकर ऊपर की ओर लहराती हुई जा रही हो |

मैं ध्यान की अवस्था में चला गया | उस अवस्था की कोई व्याख्या करना संभव नहीं है | यूं समझ लीजिए कि वह शब्दों से परे है | मेरी भ्रूमध्य में अर्थात दोनों भौंह के बीच वाले स्थान पर हल्के हल्के सफेद प्रकाश का घेरा सा दिखाई देने लगा | वह प्रकाश का घेरा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा | ऐसा लग रहा था जैसे प्रकाश की कोई बड़ी सी सुरंग हो और उस सुरंग के मुहाने पर मैं खड़ा हूं | यह स्थिति कुछ क्षण तक रही होगी | फिर मुझे वहां पर त्रिशला का बिंब दिखाई दिया | उसने मुझे हाथ पकड़ कर अपनी और खींचा और हम दोनों दौड़ते हुए प्रकाशीय गुफा की ओर चले गए | आगे सब कुछ

प्रकाशमान था | सब तरफ सफेद सफेद चांदनी जैसा मध्यम सुखद और शीतल प्रकाश फैला हुआ था और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था | हर तरफ सिर्फ सफेद सफेद दूधिया प्रकाश,,,,,

यह स्थिति लगभग 1 घंटे तक रही होगी | वहां पहुंचने के बाद त्रिशला विलुप्त हो चुकी थी | उस पूरे प्रकाश के बीच में मैं अकेला शांत और शून्य की अवस्था में बैठा हुआ था | ऐसा लग रहा था कि वहीँ समय थम जाए वे क्षण कभी समाप्त ही ना हो और उन क्षणों के साथ मेरा जीवन संपूर्ण हो जाए...

यह एक प्रामाणिक सत्य है कि जो साधक इस पृथ्वी पर आता है उसके पीछे भगवती महामाया का कोई न कोई निर्देश होता है | वह किसी निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही साधकों को इस धरती पर सिद्धियां और साधना का अवसर प्रदान करती है | चाहे वह रामकृष्ण परमहंस हों, चाहे वो विवेकानंद जी हो, हर किसी को किसी न किसी कार्य के निमित्त ही इस पृथ्वी पर भगवती साधक जीवन में जन्म देती है | यह एक

तार्किक तात्विक सत्य है जो ठुकराया नहीं जा सकता | इसलिए वह स्थिति भी समाप्त होनी ही थी ..

काफी देर बाद मुझे उस दूधिया प्रकाश के बीच में से एक हल्का नीले रंग का प्रकाश जैसा प्रतीत होने लगा | धीरे-धीरे वह नीला प्रकाश मेरी तरफ आने लगा | वह नीला प्रकाश जैसे मेरे पास आया मुझे उसकी आकृति नीले शिवलिंग के जैसी दिखाई दे रही थी | उस शिवलिंग के मध्य में मुझे शिव शक्ति का बिम्ब दिखाई दे रहा था दोनों के हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हुए थे | वह नीला शिवलिंग मेरे पास आता गया। आते आते मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरे आज्ञा चक्र में प्रवेश कर रहा हो और उसमे समाहित हो गया हो। जैसे ही वह समाहित हुआ मुझे दोबारा झटका लगा और मैं वापस सामान्य स्थिति में आ गया |

मैंने आंखें खोली | मैं गुफा में ही बैठा हुआ था | मंत्र उच्चारण की स्थिति वैसी ही बनी हुई थी और हम दोनों संयुक्त रूप से उसी प्रकार मंत्र का जाप कर रहे थे | सूरज की किरणें हल्के हल्के अपनी तेजस्विता खोती जा रही थी जो इस बात का प्रतीक थी कि शायद शाम

ढलने की अवस्था आ चुकी थी. धीरे-धीरे सूरज की किरणें मंद होती हुई लुप्त हो गई। अंधेरा हल्का आभास लेकर उस गुफा के इर्द-गिर्द छाने लगा |

धीरे-धीरे रात गहराने लगी | जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया था उस चबूतरे के नीचे तीन आले बने हुए थे | तीनों में तीन दीपक साधना के प्रारंभ से ही जल रहे थे | संभवतः वे साधना काल की पूर्णता तक जलने के लिए लगाए गए होंगे | उनके अलावा उस गुफा में प्रकाश का कोई माध्यम नहीं था | रात ढलने के साथ उन दीयों का प्रकाश ही गुफा में प्रकाशित हो रहा था | हम दोनों संयुक्त अवस्था में मंत्र जाप करते हुए बैठे थे |

लगभग साढ़े सात बजे होंगे जब मंत्र जाप करते करते त्रिशला ने मुझे पीठ के बल लिटा दिया | अब स्थिति यह थी कि मैं शवासन में लेटा हुआ था और पद्मासन की स्थिति में त्रिशला मेरे ऊपर स्थिति थी | मंत्रोचार अभी चल रहा था | मुझे ऐसा लगने लगा की मैं भारहीन सा हो गया हूँ | त्रिशला का भार भी अब मुझे सिर्फ वायु के स्पर्श जैसा ही महसूस हो रहा था | धीरे-धीरे मेरा शरीर चबूतरे से ऊपर उठने लगा |

ऐसा कहा जाता है कि उच्च स्तर की साधनाएं पृथ्वी से स्पर्श करके नहीं की जा सकती । उनके लिए अधर में अर्थात वायु में आसन लगाना पड़ता है | यह आसन साधना करते करते अपने आप लग जाता है | उसके लिए कोई विशेष प्रयास करने की जरूरत नहीं पड़ती | मेरे पाठक इस बात को जानते होंगे क्योंकि मैंने पिछली घटनाओं में भी इस प्रकार का वर्णन किया हुआ है | अब स्थिति यह थी कि मैं शवासन में शून्य में लटका हुआ था और त्रिशला पद्मासन में मेरे ऊपर बैठी हुई थी | मैं चबूतरे से तकरीबन एक से डेढ़ फुट ऊपर में स्थित था और वहां पर स्थिर हो गया |

दस पंद्रह मिनट इसी स्थिति में मंत्र जाप होता रहा | मुझे अब सम्पूर्ण देहयष्टि दिख रही थी जो मुझे ज्यादा विचलित कर रही थी । जब स्थिति मुझे नियंत्रण से बाहर जाती हुई लगी तो मैंने पुनः अपने रामबाण उपाय का प्रयोग किया मदन कामेश्वर गुटिका के पास स्पर्श करते हुए गुरु मंत्र का जाप किया और तब जाकर शरीर पर पुनः नियंत्रण मिला । दोनों का सस्वर जाप जारी था ।

लपटों का तांडव

चबूतरे के आले के अंदर रखी हुई दीपक की लपटें धीरे-धीरे बढ़ने लगी | आले चबूतरे से लगभग 4 से 5 इंच नीचे बने हुए थे | दीपक की लपटें धीरे-धीरे बढ़ने लगी और मेरे शरीर के पास तक आने लगी | यानी आप समझ लीजिए कि लगभग डेढ़ से दो फुट ऊंची लपटें रही होगी | बत्तियां भी मोटी मोटी थी इसलिए लपटे मोटी मोटी निकल रही थी | उनकी जलन मैं अपनी पीठ पर , कमर पर और पाँव के पास महसूस कर सकता था | कुछ समय बीता अब एक लौ मेरे गले के निचले हिस्से के पास के हिस्से में झुलसा रही थी | दूसरी लो ठीक मेरे मध्य भाग पर थी और उसकी जलन मैं अपने अंग पर भी महसूस कर रहा था | संभवतः उसकी जलन त्रिशला को भी हो रही थी क्योंकि वह भी अपनी जगह पर हल्के हल्के कसमसा रही थी | तीसरी लौ मेरे टखनों के पास थी | तीनों बेहद तकलीफदेह स्थिति में पहुंचा रही थी | साधना के बीच में इस प्रकार की परीक्षण हो सकते हैं यह तो मुझे मालूम था लेकिन यह परीक्षण बड़ा ही पीड़ादायक था |

कुछ देर में कमरा चमड़े की जलने की बदबू से भरने लगा | वह बदबू मेरे चमड़े के जलने की थी । मैं स्पष्ट महसूस कर रहा था कि वह लौ धीरे-धीरे मेरे चमड़े को जलाकर अंदर की ओर बढ़ती जा रही है | यह स्थिति लगातार जारी रही | जलन का एहसास धीरे धीरे बढ़ता गया ।

इस दौरान मेरे गले के पास वाली लपट मेरे अंगों को जलाती हुई मेरे गले के नीचे से शरीर को भेदती हुई ऊपर आ चुकी थी | टखनों में भी मैं उसी जलन को महसूस कर रहा था संभवत वह भी पूरा जल चुका होगा | बीच वाली लपट मेरे मध्य भाग को जलाती हुई अब मूल के पास तक पहुंच चुकी थी | मुझे ऐसा लग रहा था कि वह हिस्सा धीरे धीरे जल रहा है । वह लपट मेरे अंगों को जलाकर नष्ट करती जा रही है | मैं महसूस कर रहा था कि मेरे अंग को जलाने के बाद वह ज्वाला त्रिशला के शरीर में प्रवेश कर गयी | लगभग आधे घंटे तक वही स्थिति चलती रही | अब मै त्रिशला के चेहरे पर पीड़ा के भाव स्पष्ट देख रहा था | वह भी बहुत प्रयास करके अपने आप पर नियंत्रण कर के बैठी हुई थी |

आग की लपटें धीरे धीरे उसके शरीर से ऊपर की ओर जा रही थी | मुझे भी अपने मध्य भाग से गुजरती उस जलन का आभास हो रहा था | आधे घंटे के बाद उसके ऊपर वाले भाग से अग्नि की लपट बाहर निकलने लगी | ऐसा लग रहा था जैसे गैस कटर की फ्लेम मेरे मूल भाग से प्रवेश करती हुई उसके पूरे शरीर को भेदती हुई सर के ऊपर की ओर निकल रही है |

जलन और दर्द का एहसास लगातार हो रहा था | कई बार ऐसा होता है कि लम्बे समय तक जब पीड़ा बनी रहे तो पीड़ा की आदत हो जाती है | हम दोनों की स्थिति भी वही थी | साधना को बीच में भंग नहीं किया जा सकता था | जलन पिछले कई घंटों से लगातार जारी थी | मंत्र जाप अब भी चल रहा था और लपटें शरीर के तीनों हिस्सों से बाहर निकल कर जैसे अपनी ताकत का प्रमाण दे रही हो | वे लप-लपाती हुई निकल रही थी धीरे-धीरे ऊपर बढ़ते बढ़ते वे छत तक पहुंच रही थीं |

यह स्थिति तकरीबन 2 घंटे तक रही होगी | उसके बाद अचानक वह कमरा सुगंध से भरने लगा | यह सुगंध अजीब सी थी | जिसे मैंने अपने जीवन में कभी महसूस

नहीं किया था | इसकी खुशबू अष्टगंध चमेली और न जाने किस किस चीज की मिली जुली सी थी | धीरे धीरे मेरे पाँव के पास एक धुंधली सी स्त्री आकृति प्रकट हुई उसने मेरे पांवों को पकड़ लिया | जैसे ही उसने मेरे पावों को पकड़ा पैर के पास वाली लौ की तपन शांत होने लगी | वह लौ अब भी छत तक टकराकर जल रही थी लेकिन उसकी गर्मी अब महसूस नहीं हो रही थी | धीरे-धीरे वह लौ नीचे की ओर आने लगी और वापस दिए के पास तक पहुंच गई | इसके बाद एक आकृति मेरे सर की तरफ प्रकट हुई । वह भी एक स्त्री आकृति थी और इस बार मेरे गर्दन के पास वाली लपट भी उसी प्रकार ठंडी होते हुए धीरे-धीरे दीपक तक पहुंच गई | इसके बाद मेरे दाएं और बाएं तरफ दो पुरुष आकृतियां प्रकट हो गयीं | उन्होंने दोनों हाथों को बांधकर नितंब वाले स्थान पर सीढ़ी जैसा स्ट्रक्चर बना दिया और उसमें मुझे थाम लिया | जैसे ही उन्होंने थामा त्रिशला के सिर से निकल रही लपट भी शांत होते हुए नीचे आ गयी और दीपक के पास समाहित हो गई | वे चारों हमें वापस उसी चबूतरे पर लिटाकर फिर से विलुप्त हो गए |

अब वापस शरीर का भार महसूस हो रहा था | मंत्र जाप चल रहा था | नीचे आकर हम वापस फिर उसी मुद्रा में आ गए जिस मुद्रा में हमने साधना प्रारंभ की थी | पहले नीचे से स्पष्ट कुछ दिखाई नहीं दे रहा था । मैंने त्रिशला के सिर से निकलती हुई लौ जरूर देखी थी | अब इस अवस्था में देख सकता था कि उसके सर के ऊपर के बाल जले हुए स्पष्ट दिख रहे थे | मेरी गर्दन में भी छेद मुझे आभास हो रहा था और मुझे मूल भाग पर भी और पांव के पास भी बड़ा सा जला हुआ छेद दिखाई दे रहा था | जैसे लपट के गुजर जाने के बाद होता है | मर्मांतक पीड़ा तीनों जगह पर भरपूर हो रही थी लेकिन किसी प्रकार से मंत्र जाप जारी था | अब जो स्थिति थी उसमें आवाज निकल नहीं रही थी इसलिए मन ही मन मंत्र जाप लगातार हो रहा था |

दिव्य प्रकाश

ब्रह्म मुहूर्त से कुछ समय पहले वह कमरा दिव्य प्रकाश से जगमगा उठा | अब कमरे में वैसा ही प्रकाश फैला हुआ था जैसा हम लोगों ने शून्य की अवस्था में देखा था | उसका कोई स्रोत नहीं दिख रहा था लेकिन पूरा कमरा सफेद रंग के प्रकाश से जगमगा रहा था | रात का समय था, इसलिए ऐसा होने का कोई तार्किक कारण नहीं दिख रहा था मगर गुफा सफेद प्रकाश से जगमगा रही थी |

उस प्रकाश के प्रकट होने के बाद एक सफ़ेद रोशनी का गोल छल्ला हमारी तरफ आने लगा | जैसे-जैसे वह हमारे पास आया वह दो भागों में बट गया | आते समय वह छल्ला सफेद रंग का था | दो भागों में बटने के बाद उसमें से एक छल्ला नीले रंग का और दूसरा छल्ला पीले रंग का हो गया | नीले रंग का छल्ला मेरे शरीर के पास आकर अवस्थित हुआ और पीले रंग का छल्ला त्रिशला के शरीर के पास जाकर अवस्थित हुआ |

दोनों छल्ले गोलाकार गति में घूमने लगा | यह गोला इस प्रकार था कि उसका एक छोर मेरे गुह्य भाग से प्रवेश होता था और ऊपरी भाग मेरे मस्तक के उपर स्थित ब्रह्मरंध्र से बाहर निकलता था और वह पीछे की तरफ वृत्त बनाता था | ठीक वैसे ही पीले रंग का छल्ला भी त्रिशला के गुह्य भाग से प्रवेश कर ब्रह्मरंध्र से बाहर निकल कर उसके पीछे की तरफ वृत्त रूप में मौजूद था | दोनों अपने अपने स्थान पर तेजी से घूम रहे थे |

मैं उस छल्ले के अपने शरीर के अंदर प्रवेश करने से बाहर निकलने को स्पष्ट महसूस कर रहा था | उसका आवागमन ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई बिजली का करंट नीचे से घुस कर सिर से बाहर निकल रहा है और फिर वापस नीचे से अंदर प्रवेश कर रहा है | कुछ समय के बाद दोनों छल्ले आपस में एक दूसरे के साथ गोल गोल घूमने लगे | दोनों अलग-अलग घूम रहे थे , कभी वे आपस में एक दूसरे से टकराते थे तो ज़ोर की आवाज होती थी और चिंगारियां निकलती थी |

यह स्थिति लगभग एक से डेढ़ मिनट रही होगी | उसके बाद धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के साथ मिलने लगे

और उनकी गति बढ़ने लगी । मेरी तरफ वाला छल्ला त्रिशला के बाएं कंधे के पास से होता हुआ वापस मेरे पास आ रहा था |

वही स्थिति उसके छल्ले की भी थी | उसके ब्रह्मरंध्र से निकला हुआ छल्ला मेरे बाएं कंधे के पास स्पर्श किया हुआ था और वह वापस उसके अंदर प्रवेश कर रहा था | लगभग 10-15 सेकंड तक दोनों छल्ले उसी अवस्था में रहे | उसके बाद एक जोर की आवाज के साथ दोनों आपस में चिपक गए | उनके चिपकने से चिनगारियों की वर्षा चारों तरफ होने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे ढेर सारे अनार एक साथ जल रहे हों ।

उन दोनों छल्लों के चिपकने के साथ ही हम दोनों का भी शरीर एक दूसरे से और कसकर चिपक गया | अब मैं स्पष्ट महसूस कर रहा था कि वह दोनों छल्ले वापस सफेद रंग के हो चुके थे और फिर से वर्तुल गति में चल रहे थे | इस बार वर्तुल गति करते हुए उन छल्लों की दिशा में परिवर्तन आ चुका था | अब वह मेरे अंग से होकर निकलती और त्रिशला के अंगों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र से बाहर निकल कर मेरे आज्ञा चक्र में प्रवेश

करके फिर मेरी रीढ़ की हड्डी से होते हुए वापस बाहर निकल कर उसमें समाहित हो रहे थे |

शुरू में मध्यम गति में यह चलता रहा और उसके बाद धीरे-धीरे उसकी गति बढ़ती गई | जैसे-जैसे उसकी गति बढ़ती गई हम दोनों का शरीर धीरे-धीरे पारदर्शी सा होने लगा | सबसे पहले मेरी नजर त्रिशला के चेहरे पर पड़ी | मुझे अब उसके पीछे पीछे की चीजें दिख रही थी | मेरा शरीर भी धीरे-धीरे पारदर्शी होता जा रहा था | लगभग 1 घंटे के बाद यह स्थिति हो गई कि हम दोनों का शरीर पूरी तरह से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कांच का या पॉलिथीन का बना हुआ शरीर हो | उसके बीच में सफेद रंग का चिंगारियां फेंकता हुआ रोशनी का वह सफ़ेद गोला गोल गोल घूम रहा था | उसकी गति बढ़ती जा रही थी |

उसकी गति बढ़ते बढ़ते हम दोनों फिर से ऊपर उठ गए | इस बार हम लोग लगभग उस गुफा की छत के करीब तक पहुंच गए और वही अधर में स्थित हो गए | चक्र वैसा ही घूमता रहा | घूमते घूमते उसने हम दोनों को 360 डिग्री में घुमा दिया अर्थात अब हम लोग भी

चक्कर काट रहे थे | संयुक्त अवस्था में ही हमारा शरीर गोल-गोल किसी फुटवाल की तरह घूम रहा था | उसकी दिशा बड़ी अजीबो-गरीब थी | कभी दाएं तरफ घूमता था कभी बाएं तरफ घूमता था | ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे रोलर स्केटर की राइड में बैठे हुए हो, और उसकी दिशा का कोई हिसाब किताब ना हो |

वह अपने हिसाब से कभी क्लॉक वाइज घूमता था, कभी एंटी क्लॉक वाइज । कभी ऊपर से नीचे घूमता था । कभी नीचे से ऊपर यानी उसका कोई हिसाब-किताब समझ में नहीं आ रहा था | हम लोग किसी बड़े ग्रह के आकर्षण में घूमते हुए छोटे से उल्कापिंड की तरह गुलाटी खा रहे थे | सारा शरीर गुफा में उसी प्रकार से इधर से उधर घूम रहा था |

अंत में वह चक्र धीरे धीरे छोटा होता हुआ फिर से दो टुकड़ों में बट गया | अबकी बार एक भाग मेरे अंग में और एक भाग त्रिशला के अंग में जाकर समा गया | जैसे ही वह समाया हम दोनों वापस चबूतरे पर स्थित हो गए और हमारा शरीर भी धीरे-धीरे वापस सामान्य अवस्था में आने लगा |

गुलाब का चबूतरा

चबूतरा गुलाब के फूलों से भरा हुआ था । ऐसा लग रहा था जैसे चबूतरे पर गुलाब की चादर बिछ गई हो । गुलाब से भरे उस चबूतरे पर बैठते ही ऐसा लगा जैसे बर्फ की सिल्ली पर बैठ गए हों | सारी गर्मी और जलन समाप्त हो गयी थी |

हम दोनों का शरीर सामान्य हो चुका था | लपटों से जलने के निशान सारे के सारे गायब हो चुके थे | शरीर बेहद हल्का फुल्का लग रहा था | अब मंत्रों की आवाज भी बाहर निकल पा रही थी | बड़ी देर के बाद मंत्रों को जोर से बोलने का अवसर मिला था | इसलिए हम दोनों जोर-जोर से मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे |

बाहर प्रकाश फैलने लगा था । यानी सुबह हो चुकी थी | रात के 9 बजे से हम लोगों ने मंत्र जाप प्रारंभ किया था | उस हिसाब से अगले दिन सुबह के 9 बजे तक हमें मंत्र जाप करना था | दूसरे दिन की सुबह हो गई थी | लगभग 6 बज गए होंगे | अब केवल 3 घंटे का समय

शेष रह गया था | जिसे हर हालत में पूरा करना था और इस साधना में सफलता प्राप्त करनी थी |

लगभग आठ साढ़े आठ बजे का समय रहा होगा तभी मुझे फिर से त्रिशला की तरफ से ज़ोर का आघात महसूस हुआ | उसके बाद आघात की तीव्रता बढ़ती गई । कमरा फिर चमेली की महक से भर चुका था । चमेली की महक बहुत तीव्र थी । त्रिशला का आघात लगातार तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा था । लगभग 10 मिनट तक वैसी ही स्थिति रही होगी । फिर वापस शांति हो गई यह शांति कुछ 10-15 मिनट रही होगी । चमेली की खुशबू पूरे गुफा में भरी हुई थी । ऐसा लग रहा था जैसे वह खुशबू हम दोनों के शरीर से ही निकल रही है .....

रहस्यमय चबूतरा

कमरे के बीच में वह चबूतरा था । उसके चारों तरफ काफी जगह थी | उसके चारों तरफ आठ चबूतरे बने हुए थे | उन चबूतरों के कुल आठ घेरे थे यानि कुल चौसठ चबूतरे और बने हुए थे |

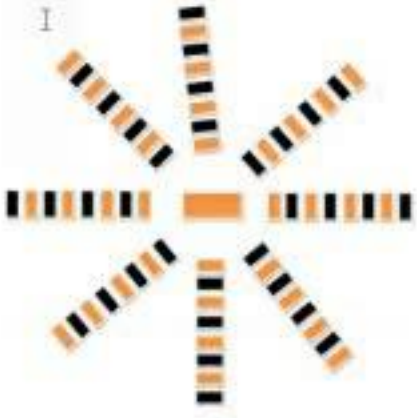

गुफा की दीवारों पर वैसी ही आकृतियां बनी हुई थी जैसी चौसठ योगिनी मंदिर के बाहर बनी हुई थी । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे आकृतियां जीवंत होती जा रही है ।

सारी आकृतियां जागृत दिखाई देने लगी । मैं सारी आकृतियों को तो नहीं देख पा रहा था क्योंकि त्रिशला ने मुझे वापस शवासन में कर दिया था । वह उसी

प्रकार मेरे ऊपर स्थापित थी । मुझे दाहिनी और बाएं तरफ की आकृतियां दिखाई दे रही थी । सभी चबूतरो पर एक एक युगल आकृति स्थापित थी । वे उसी प्रकार संयुक्त अवस्था में थी | जैसे हम दोनों थे और उनमे भी गतिशीलता दिखाई दे रही थी । लगभग पंद्रह मिनट के बाद त्रिशला ने पुनः आघात प्रारंभ कर दिए | इस बार आघात की तीव्रता पहले से भी ज्यादा थी | संभवतः साधना का अंतिम चरण चुका था । जैसे-जैसे त्रिशला की तीव्रता बढ़ती जाती थी ..... आकृतियों में भी तीव्रता में वृद्धि होती जा रही । मैं अपने चारों ओर आकृतियों को देख सकता था ।

त्रिशला के आघातों की तीव्रता बढ़ती जा रही थी .....

जैसे-जैसे तीव्रता बढ़ रही थी .....

मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी में तरंगों के लगातार नीचे से सिर की ओर प्रवाहित होने का आभास बढ़ने लगा । आघातों की तीव्रता लगातार बढ़ती रही और बढ़ते बढ़ते एक स्थिति ऐसी आ गई जहां पर पहुंचकर उसने मुझे खींच कर वापस प्रारंभिक स्थिति में बैठा लिया । हम

दोनों का माथा आपस में स्पर्श हो रहा था और दोनों एक साथ जुड़े हुए थे । उसके मुंह से तीन बार हुंकार की ध्वनि निकली । उसके बाद किसी विशेष मंत्र का उच्चारण प्रारंभ हो गया जो शायद उस साधना का समर्पण मंत्र रहा होगा ।

वज्रोली

मुझे अपने ऊपर नियंत्रण छूटता सा लगा मैंने पुनः अपनी जांघ पर गुटिका के ऊपर हाथ फेरा और गुरु मंत्र का उच्चारण करने की कोशिश की लेकिन उच्चारण करने से पहले ही हम दोनों एक साथ स्खलित हो गए .....

स्खलन के साथ ही पूरा मस्तिष्क विचार शून्य हो गया । मंत्रों का उच्चारण भी बंद हो गया और फिर से हम दोनों चबूतरे से लगभग एक फुट ऊपर उठकर स्थित हो गए ।

हम दोनों की आंखें बंद थी और दोनों एक दूसरे से जैसे मिलकर एक हो गए हो । बेहद शांत आभास होने लगा

ऐसा लग रहा था जैसे भयानक तूफान आने के बाद सब कुछ शांत और स्थिर हो गया हो ।

मेरी आंखें बंद थी ...

लेकिन बंद आंखों से भी मुझे अपने आसपास जो भी हो रहा था, वह दिख रहा था....

मैं अपने आप को भी देख पा रहा था ।

त्रिशला को भी देख पा रहा था ।

अपने चारों ओर घूम रही उन चौसठ योगिनीयों की आकृतियों को भी देख पा रहा था.....

जो अब युगल रूप में आशीर्वाद की मुद्रा में हमारे चारों ओर खड़ी हुई थी ।

थोड़ी देर के बाद वह सारी आकृतियां वापस अपने अपने आलो में चली गई और हम दोनों भी वापस चबूतरे पर स्थित हो गए ।

लेकिन अभी हम दोनों जुड़े हुए थे, ऐसा लग रहा था जैसे हमको किसी शक्ति ने जोड़े रखा हो । मैंने अलग हटने की कोशिश की लेकिन हट नहीं पाया ।

तभी ....

कमरे में रेणु माई का आगमन हुआ । उन्होंने संतुष्टि के भाव के साथ हम दोनों को देखा ।

उन्होंने हम दोनों के सिर पर एक एक हाथ रखा ।

उनका हाथ लगते ही बिजली के झटके जैसा एहसास हुआ.....

उसके बाद ऐसा प्रतीत हुआ जैसे अंग से श्रवित द्रव्य वापस अंदर की ओर खींच रहा हो । मैंने योग में इस क्रिया के विषय में सुन रखा था । इसे वज्रोली क्रिया कहते हैं ।

यह योग की सबसे जटिल क्रिया मानी जाती है । इस क्रिया को सीखने के लिए कई वर्षों का निरंतर अभ्यास जरूरी होता है । इसमें साधक अपने युगल क्रिया के

बाद स्रावित द्रव्य को उसी अंग के माध्यम से वापस अपने शरीर में खींच लेता है । वही सूक्ष्म रूप से इडा पिंगला और सुषुम्ना नाड़ीयों के द्वारा अंतरनिहीत होता हुआ सीधे ब्रह्मरंध्र की ओर बढ़ता है । वहां वह सहस्त्रार चक्र को स्पंदित करता है । कुंडलिनी जागरण के अंतिम चक्र को सहस्त्रार चक्र कहा जाता है । जिस की स्थिति मस्तिष्क के ऊपर बताई जाती है । इसका आकार छतरी के जैसा प्रदर्शित किया जाता है । जिसमें से लगातार अमृत बिंदुओं की वर्षा होती रहती है ।

यह स्थिति कुछ क्षणों तक रही होगी लेकिन संपूर्ण शरीर में अजीब सी ताजगी और ताकत का एहसास होने लगा । फिर से शरीर का तापमान बढ़ने लगा ऐसा लग रहा था जैसे 102 डिग्री का बुखार हो गया हो.....

माई ने कुछ शांति मंत्रों का उच्चारण किया .....

उसके बाद उन्होंने कुछ इशारा किया .....

अब हम दोनों का शरीर चबूतरे से निकलकर उनकी तरफ बढ़ने लगा ।

वह गुफा से बाहर की तरफ जाने लगी ।

हम दोनों का शरीर भी उसी प्रकार हवा में लटका हुआ उनके पीछे-पीछे जाने लगा ।

वह नदी के तट तक हमको ले गई ।

उसके बाद उन्होंने अपने हाथों का इशारा किया और हम दोनों नदी के जल के ऊपर हवा में स्थित हो गए ।

हम दोनों जैसे ही नदी के ऊपर अवस्थित हुए, नदी की लहरें अपने आप उफान मारने लगी । आमतौर पर लहरें समुद्र में ही दिखती हैं लेकिन मैं देख रहा था कि उस नदी में भी लहरें उठ रही थी । हम लोग नदी से लगभग डेढ़ फुट की ऊंचाई पर रहे होंगे । नदी की लहरें अब हम से टकरा रही थी । करीब 5-10 मिनट तक वे लहरें हम दोनों से टकराती रही ।

रेणु माई ने अपने हाथों का इशारा किया और लहरें शांत हो गई .....

लहरों के शांत होते ही हम दोनों धीरे धीरे पानी में उतरने लगे । उसी मुद्रा में नदी के अंदर जैसे डुबकी लगाई हो

वैसे ही हम लोग पूरा नदी के अंदर चले गए। अंदर जाने के बाद फिर से उसी मुद्रा में हम लोग बाहर आए। ऐसा 7 बार हुआ और सातवीं बार जब हम नदी से बाहर आए तो फिर रेनुमाई ने कुछ मुद्राएं दिखाईं। हम लोग वापस उनके पीछे पीछे हवा में ही गुफा की ओर चल पड़े।

भैरव कृपा

उन्मत्त भैरव की मूर्ति के पास पहुंचने के बाद उन्होंने सामने के चबूतरे पर हम दोनों को स्थापित कर दिया ....

उसके बाद अपने हाथ में रखे हुए कमंडल को हवा में उछाल दिया । वह कमंडल सर के ऊपर आकर तिरछा हो गया और उसमें से दूध गिरने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे हम लोगों का अभिषेक हो रहा हो । माई का मंत्र जाप साथ में जारी था और वह दूध हमारे ऊपर लगातार गिर रहा था । लगभग आधे घंटे तक यह क्रिया चलती रही और लगातार हमारे ऊपर उस छोटे से कमंडल से दूध भी गिरता रहा । आधा घंटा बीतने के बाद हम दोनों का शरीर स्वतंत्र हुआ ।

हम दोनों उनके चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हुए लेट गए । उन्होंने दोनों को उठाकर अपने सीने से लगा लिया और कहा - तुमने सफलता प्राप्त कर ली है । मुझे तुम पर गर्व है । चलो । अब उन्मत्त भैरव का आशीर्वाद प्राप्त करो । जब तक मैं ना कहूं तब तक उनके चरणों से उठना नहीं ।

उन्मत्त भैरव के सामने हम लोग दोनों दंडवत हो गए । त्रिशला ने उनका दाहिना पैर पकड़ा और मैंने उन्मत्त भैरव का बाया पैर पकड़ा । अंगूठे पर अपना माथा टिका कर दंडवत मुद्रा में लेट गए ।

वह कमंडल अब हमारे ऊपर से हटकर उन्मत्त भैरव के सिर के ऊपर चला गया । उसमें से सुगंधित तेल की धारा निकलने लगी । तेल की धारा भगवान भैरव के ऊपर से बहती हुई हमारे ऊपर से बहकर नीचे की तरफ जा रही थी ।

उसके बाद भैरव कवच का पाठ किया और 108 नाम के साथ उनका पूजन किया । हम दोनों को उठ जाने के लिए कहा । हम दोनों खड़े हो गए । उन्मत्त भैरव जी को प्रणाम करने के बाद रेणु माई के चरण स्पर्श करके उनके सामने खड़े हो गए । रेणु माइ ने हम दोनों को बाहर चलने का इशारा किया । हम दोनों उनके पीछे-पीछे फिर से गुफा के बाहर नदी की तरफ चल पड़े । नदी तट पर पहुंचकर उन्होंने हम दोनों को कमर तक पानी में खड़ा कर दिया और एक दूसरे का तर्पण करने के लिए कहा । हम दोनों ने एक दूसरे के अंगों में 108

बार जल समर्पित किया और पुनः वापस बाहर आ गए ।

माई बोली - यह साधना बेहद जटिल है । इस साधना से जहां कामेश्वर सिद्धि प्राप्त होती है वही चौसठ योगिनीओं की भी कृपा प्राप्त होती है | योगीनीयों की कृपा प्राप्त किए बिना उच्च स्तर की साधनाएं संभव ही नहीं है क्योंकि महाविद्याओं के साथ योगिनीया चलती है । उन्हें प्रसन्न किए बिना महाविद्याओं के पास पहुंचना संभव नहीं है ।

तब तक संभवत: दोपहर का एक बज चुका था । हम दोनों ने त्रिशला से विदा ली । रेनुमाई मुझे उसी रहस्यमय गुफानुमा रास्ते से होते हुए वापस पहले वाले कक्ष में ले आई । यह वही कक्ष था जिसमें मैंने हत्था जोड़ी की साधना की थी । वहां पहुंचने के बाद रेणु माइ ने फिर से दीवाल की ओर त्राटक करते हुए मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ किया । लगभग आधे घंटे तक मंत्र उच्चार होने के बाद उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मेरे सर पर हल्के से हाथ फिराया । उसके बाद उन्होंने मुझे एक योगिनी मंत्र प्रदान किया ।

उन्होंने कहा - तुम अब इस 64 योगिनी मंदिर में प्रवेश करने के अधिकारी हो चुके हो । इसलिए मैं तुम्हें यह मंत्र दे रही हूं । यह मंत्र तुम्हें वह क्षमता प्रदान करेगा जिससे किसी भी चौसठ योगिनी मंदिर के अंदर तुम प्रवेश कर सकोगे । वहां के गुप्त साधनात्मक जगह का अनुभव भी कर सकोगे ।

आगे बोली - पिछली बार इस दीवाल को पार करने के लिए मैंने अपने मंत्रों का उच्चारण किया था । इस बार बाहर जाने के लिए तुम इस मंत्र का 108 बार उच्चारण करो । भैरव और योगिनी का ध्यान करो , उससे यह गुप्त द्वार खुलेगा । मैंने योगिनी मंत्र का 108 बार उच्चारण किया उन्मत्त भैरव को ध्यान किया और दीवाल की ओर त्राटक करना प्रारंभ किया । लेकिन दीवाल वैसी की वैसी थी । मैंने असफलता के भाव लेकर माई की ओर देखा । उन्होंने आश्वस्त किया और दोबारा से करने को कहा । मैंने फिर से 108 बार उच्चारण किया, भैरव ध्यान किया और त्राटक करने लगा । लेकिन फिर कुछ नहीं हुआ ....

माई ने फिर से करने के लिए कहा । ऐसा लगभग 10 बार हुआ । 11वीं बार उन्होंने जब मुझे फिर से करने के लिए कहा तब तक मैं अंदर से कहीं ना कहीं निराश तो था ही लेकिन मुझे पता था कि जब वह करवा रही है तो उसमें कुछ रहस्य होगा ।

मैंने 11वीं बार फिर से भैरव ध्यान किया । इस बार मैंने आंखें बंद कर उन शक्तियों को याद किया जो साधना के दौरान मेरे चारों ओर विद्यमान थी । अपने मानस पटल पर स्पष्ट करते हुए मैंने 108 बार योगिनी मंत्र का जाप किया और जब आंखें खुली तो . .....

सामने का पत्थर धीरे धीरे पारदर्शी होता जा रहा था....

फिर मैंने उन्मत्त भैरव का ध्यान किया और ध्यान पूरा होते-होते वह पूरा पारदर्शी हो चुका था ।

मैंने रेनू माई की ओर देखा उन्होंने मुस्कुराकर मेरी ओर देखा और कहा - तुम्हारा मेरा साथ यहां पर समाप्त हुआ .....

अब तुम जाओ मुझे अभी यहां और कुछ काम है...

मैंने उनके चरण स्पर्श किए माई ने आशीर्वाद के रूप में मेरे सर पर हाथ फेरा ....

मेरे माथे पर चुंबन लेते हुए मुझे विदा किया.....

मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी जैसे मैं अपनी मां से बिछड़ रहा हूं .....

हम दोनों की आंखें नम थी ...

लेकिन प्रकृति का विधान है कि जो मिलता है वह बिछड़ता भी है ....

नम आंखों से उन्हें देखता हुआ हाथ जोड़कर उस पारदर्शी द्वार से बाहर निकल गया ।

बाहर निकलने के बाद मैंने पीछे मुड़ कर देखा । अभी माई दिख रही थी उनकी आंखें भी नम दिख रही थी .....

धीरे-धीरे वह पत्थर अपने मूल स्वरूप में वापस आ गया । अब कहीं से ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उस पत्थर से कोई अंदर भी जा सकता है ।

दोपहर का समय था । बाहर निकलने के बाद मुझे याद आया बनर्जी दादा तो मैंने कुछ बताया ही नहीं था । जरूर चिंता कर रहे होंगे । मैं वापस रामपुर की ओर चल पड़ा । लगभग 1 घंटे बाद मैं दरवाजे पर खड़ा था । वापी ने दरवाजा खोला और मुझे देख कर खुशी से आकर मेरे गले लग गया और जोर से चिल्लाया - दादा आ गए ! दादा आ गए !

हम दोनों साथ साथ अंदर गए । बनर्जी दादा भी तब तक कमरे से बाहर आ चुके थे । मैंने उनके चरण स्पर्श किए और अपने कमरे में चला गया .....(समाप्त)

।। श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ।।

अनिल शेखर "अमस"